सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 187, नई दिल्ली, रविवार 14 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

हार तो हर कोई मान लेता है, ये सबसे आसान तरीका है, जीतता वही है जो अंत तक लड़ता है।

03 क्राइम ब्रांच की टीम ने एक आरोपी को हथियार के साथ गिरफ्तार किया

06 एकल-उपयोग प्लास्टिक की पानी की बोतलों से पुराने...

08 मुख्यमंत्री द्वारा शून्य दुर्घटना संदेश रथ का शुभारंभ

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

'मानव अधिकार संदेश' जीवन, स्वतंत्रता और व्यक्ति की सुरक्षा का अधिकार

पिंकी कुंडू महासचिव टोलवा ट्रस्ट
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.) TOLWA

मानव के अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (अनुच्छेद 3) कहती है "हर व्यक्ति को जीवन, स्वतंत्रता और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा का अधिकार है।"

इसका अर्थ है कि प्रत्येक इंसान को गरिमा के साथ जीने, अनुचित गिरफ्तारी से मुक्त रहने और हिंसा, शोषण या असुरक्षा से सुरक्षित रहने का अधिकार है।

इस कानून पर विवाद

हालाँकि यह अधिकार क़ानून में दर्ज है लेकिन व्यवहार में कई विवाद और चुनौतियाँ सामने आती हैं:

1. फर्जी मुठभेड़,
2. हिरासत में मौतें
3. मनमानी हत्याएँ
4. ग़ैर-क़ानूनी गिरफ्तारी
5. हिरासत व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन करती हैं।
6. आतंकवाद
7. मानव तस्करी
8. जातीय या लैंगिक हिंसा व्यक्ति की सुरक्षा को खतरे में डालते हैं।
9. कई बार सरकारें राज्य की सुरक्षा को व्यक्तिगत स्वतंत्रता से ऊपर रखती हैं, जिससे क़ानून का दुरुपयोग होता है।

पड़ोसी देशों की स्थिति

पाकिस्तान में जबरन ग़ायब कर दिए जाने और सुरक्षा एजेंसियों द्वारा मनमानी हिरासत की घटनाएँ आम हैं।

बांग्लादेश में न्यायेतर हत्याएँ और असहमति दबाने के आरोप लगते रहे हैं।

श्रीलंका में गृहयुद्ध के बाद अल्पसंख्यकों पर दबाव और सेना की मौजूदगी चिंता का विषय है।

नेपाल में लोकतांत्रिक ढाँचा होने के बावजूद जातिगत भेदभाव और महिला हिंसा बड़ी समस्या बनी हुई है।

भारत : कानून बनाम हकीकत

क़ानून:

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार देता है।

सुप्रीम कोर्ट ने इसे विस्तार देते हुए गरिमामय जीवन, गोपनीयता, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ पर्यावरण और त्वरित न्याय का हिस्सा माना है।

हकीकत:

हिरासत में मौतें, भीड़ हिंसा, साम्प्रदायिक दंगे और महिलाओं पर अपराध लगातार इस अधिकार को चुनौती देते हैं।

निवारक हिरासत कानून कई बार व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित कर देते हैं।

आर्थिक असमानता और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी यह दिखाती है कि क़ानून और वास्तविकता में गहरी खाई है।

निष्कर्ष

जीवन, स्वतंत्रता और व्यक्ति की सुरक्षा का अधिकार केवल संविधान की धारा नहीं है, बल्कि यह समाज की नैतिक जिम्मेदारी है। भारत और उसके पड़ोसी देशों की असली परीक्षा यही है कि यह अधिकार केवल क़ाग़ज़ों पर न रहे, बल्कि न्याय, जवाबदेही और समानता के रूप में हर व्यक्ति के जीवन में उतरे।

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com

साइबर सुरक्षा विचार

पिंकी कुंडू सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

"साइबर अपराध इतनी तेजी से विकसित हो रहा है की पारंपरिक पुलिसिंग उसकी गति नहीं पकड़ पा रही है। डिजिटल युग में नागरिकों की वास्तविक सुरक्षा के लिए हमें एक साइबर-कुशल पुलिस बल में निवेश करना होगा—जो केवल संख्या पर नहीं, बल्कि योग्यता, फुर्ती और उन्नत प्रशिक्षण पर आधारित हो।"

महाराष्ट्र सरकार द्वारा 5,000 पुलिसकर्मियों को साइबर सुरक्षा और जांच में प्रशिक्षित करने की पहल—साथ ही एथिकल हैकर्स को शामिल करना—एक साहसिक और सही दिशा में उठाया गया कदम है यह एक परियोजना नहीं, बल्कि एक सोच में बदलाव है।

क्यों ज़रूरी है योग्यता साइबर पुलिसिंग केवल तकनीकी कौशल नहीं, बल्कि विश्लेषणात्मक सोच, डिजिटल समझ और दबाव में त्वरित प्रतिक्रिया की मांग करता है। सही मानसिकता और प्रशिक्षण वाले अधिकारी रगोल्डन ऑवरर में धोखाधड़ी को रोक सकते हैं, डिजिटल निशानों को ट्रेस कर सकते हैं और AI सिस्टम्स के साथ मिलकर जटिल साइबर ट्रेल्स को डिकोड कर सकते हैं।

जन-निजी भागीदारी का प्रभाव विशेषज्ञों और एथिकल हैकर्स के साथ साझेदारी करके कानून प्रवर्तन एजेंसियां वास्तविक समय की थ्रेट इंटेलिजेंस, फॉरेंसिक क्षमताओं और सक्रिय रक्षा रणनीतियों तक पहुंच प्राप्त करती हैं।

यह हाइब्रिड मॉडल—जहां प्रशिक्षित पुलिसकर्मी और साइबर प्रोफेशनल्स साथ काम करते हैं—सबसे परिष्कृत साइबर सिंडिकेट्स को भी मात दे सकता है।

जागरूकता से कार्रवाई तक जागरूकता अभियान आवश्यक हैं, लेकिन उन्हें एक प्रतिक्रियाशील और तकनीकी रूप से दक्ष बल का समर्थन मिलना चाहिए। नागरिकों को केवल हेल्पलाइन नहीं, बल्कि यह विश्वास मिलना चाहिए कि उनकी डिजिटल शिकायतों का समाधान सटीकता और गति से होगा।

अब समय है कार्रवाई का अब हर राज्य को खुद से पूछना चाहिए: क्या हम साइबर अपराध योद्धा तैयार कर रहे हैं? पुलिसिंग का भविष्य डिजिटल तत्परता में है। चलिए ऐसे अधिकारियों को सशक्त बनाएं जो केवल बैज नहीं पहनते—बल्कि बैंडविड्थ का भी इस्तेमाल करते हैं।

दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के एक प्रतिनिधि मण्डल नें भारत के पर्यटन मंत्री गजेंदर शेखावत को देसी विदेशी पर्यटको और ट्रांसपोर्टर्स को होने वाली समस्याओ से अवगत कराया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन का कहना हैं राज्यों के बॉर्डर पर देसी विदेशी पर्यटको को आरटीओ द्वारा परेशान करा जा रहा हैं और साथ ही ट्रांसपोर्टर्स का आल इंडिया परमिट का भारी भरकम चलान किया जा रहा हैं। टैक्सी बसों वालो से अवैध वसूली की जा रही हैं। दिल्ली के ट्रांसपोर्टर्स टूरिस्ट टैक्सी- बसों का आल इंडिया परमिट के 90 हजार रुपए परिवहन के वाहन पोर्टल द्वारा दे रहें तो परमिट 7 दिन बाद देने का मेसेज आ रहा हैं। जब टैक्स का पैसा पूरा जमा कर दिया तो हमें तुरंत उसका परमिट मिलना चाहिए।

एसोसिएशन का कहना है की हमारे टूर पहले से बुक होते हैं, क्या हम विदेशी पर्यटको को यह बोलें की हमें सरकार परमिट नहीं दे रही हैं? अगर हम टूर केन्सिल करते हैं तो हमें बड़ा आर्थिक नुकसान होगा और अगर बगैर परमिट के गाडी टूर पर लेकर जा रहें हैं तो दुसरे राज्यों के ट्रांसपोर्ट के अधिकारी हमारे लोगो की गाड़ियों को जब्त कर रहें हैं और भारी भरकम जुर्माना लगा रहें हैं।

पर्यटन मंत्री से शिकायत की यह आज की समस्या नहीं हैं हर महीने ही ऐसा होता हैं।

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन नें पर्यटन मंत्री से विनती करी की इस परमिट को तुरंत हमें दिलवाया जाए और जो हम ने परमिट के पैसे जमा करें हैं उसको ही परमिट माना जाए। एनआईसी के पोर्टल का सर्वर डाउन होने पर दिल्ली के अलावा हर राज्य के बॉर्डर पर टूरिस्ट टैक्सी बसों से टैक्स भरने की सहूलियत का प्रबंध किया जाए और टूरिस्ट परमिट की व्यवस्था 7 दिन की करी हैं उसको तुरंत ही पैसे देने के बाद दिलवाने के निर्देश एनआईसी को दिए जाए क्योंकि देसी विदेशी पर्यटको पर इसका बुरा असर हो रहा हैं बॉर्डर पर पर्यटक खड़े रेहते हैं जिनसे उनका समय खराब होता हैं और काफी बार फ्लाइट भी छूट जाती हैं। क्योंकि राज्यों के आरटीओ अफसर टैक्स के चक्कर में टूरिस्ट टैक्सी बसों को रोके रखते हैं। भारत के पर्यटन मंत्री गजेंदर सिंह शेखावत नें ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन को आश्वासन दिया हैं की वो नितिन गडकरी को पत्र लिख कर और खुद मिलकर समस्याओ का समाधान करेंगे। मीटिंग में एसोसिएशन के मेंबर्स चन्दन मल्होत्रा, विशाल जैन और तुला राम शर्मा शामिल रहे।

दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन.

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के सदस्य बनने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म पर क्लिक करें और भरकर जमा करे, पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट (पंजीकृत अंडर सेक्शन 60), नीति आयोग भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त, एमएसएमई में पंजीकृत
https://forms.gle/VEThcFgMcknGFc1u9

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND SOCIAL WELFARE ALLIED TRUST REGT.

MEMBERSHIP FORM FOR TOLWA TRUST

transportvisheshcontent@gmail.com Switch account

The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form

* Indicates required question

How you got aware about TOLWA trust *

- Social Media
- News Paper
- Personal connection
- Youtube
- Social Function/ RTO/friends/family

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा-डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
● दशहरे के दूसरे दिन
● दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
● स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से

गरबा महोत्सव में विशेष अपील

हमारी रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है—
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें:
● पुराने कपड़े
● पुराने कंबल
● पुराने जूते-चप्पल
● बच्चों के लिए बैग
● किताबें

आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

स्थान : रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

इंदु राजपूत – 9210210071,
अभिषेक राजपूत 83928 02013,
पिंकी कुंडू 7053533169

क्या आप अपने गोत्र की असली शक्ति को जानते हैं?

यह कोई परंपरा नहीं है। कोई अंधविश्वास नहीं है। यह आपका प्राचीन कोड है।

यह पूरा लेख पढ़िए — मानो आपका अतीत इसी पर टिका हो।

1. गोत्र आपका उपनाम नहीं है। यह आपकी आध्यात्मिक डीएनए है।

पता है सबसे अजीब क्या है?

अधिकतर लोग जानते ही नहीं कि वे किस गोत्र से हैं।

हमें लगता है कि यह बस एक लाइन है जो पंडितजी पूजा में कहते हैं। लेकिन यह सिर्फ इतना नहीं है।

आपका गोत्र दर्शाता है — आप किस ऋषि की मानसिक ऊर्जा से जुड़े हुए हैं।

खून से नहीं, बल्कि विचार, ऊर्जा, तरंग और ज्ञान से।

हर हिंदू आध्यात्मिक रूप से एक ऋषि से जुड़ा होता है।

वो ऋषि आपके बौद्धिक पूर्वज हैं।

उनकी सोच, ऊर्जा, और चेतना आज भी आपमें बह रही है।

2. गोत्र का अर्थ जाति नहीं होता।

आज लोग इसे गड़बड़ा देते हैं।

गोत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं दर्शाता।

यह जातियों से पहले, उपनामों से पहले, राजाओं से भी पहले अस्तित्व में था।

यह सबसे प्राचीन पहचान का तरीका था — ज्ञान पर आधारित, शक्ति पर नहीं।

हर किसी का गोत्र होता था।

ऋषि अपने शिष्यों को गोत्र देते थे जब वे उनकी शिक्षाओं को ईमानदारी से अपनाते थे।

इसलिए, गोत्र कोई लेबल नहीं — यह आध्यात्मिक विरासत की मुहर है।

3. हर गोत्र एक ऋषि से जुड़ा होता है — एक "सुपरमाइंड" से

मान लीजिए आप वशिष्ठ गोत्र से हैं — तो आप वशिष्ठ ऋषि से जुड़े हैं, वही जिन्होंने श्रीराम और दशरथ को मार्गदर्शन दिया था।

भृगु गोत्र?

आप उस ऋषि से जुड़े हैं जिन्होंने वेदों का हिस्सा लिखा और योद्धाओं को प्रशिक्षण दिया।

कुल 49 मुख्य गोत्र हैं — हर एक ऋषियों से जुड़ा जो ज्योतिषी, वैद्य, योद्धा, मंत्रद्रष्टा या प्रकृति वैज्ञानिक थे।

4. क्यों बुजुर्ग एक ही गोत्र में विवाह मना करते थे?

यह बात स्कूल में नहीं सिखाई जाती।

प्राचीन भारत में गोत्र एक जेनेटिक ट्रैकर था।

यह पितृवंश से चलता है — यानी पुत्र ऋषि की लाइन आगे बढ़ाते हैं।

इसलिए अगर एक ही गोत्र के दो लोग विवाह करें, तो वे आनुवंशिक रूप से भाई-बहन जैसे होंगे।

इससे संतान में मानसिक और शारीरिक विकार आ सकते हैं।

गोत्र व्यवस्था = प्राचीन भारतीय डीएनए विज्ञान

और यह हम हजारों साल पहले जानते थे — जब पश्चिमी विज्ञान को जेनेटिक्स का भी अंदाजा नहीं था।

5. गोत्र = आपका मानसिक प्रोग्रामिंग

चलो इसे व्यक्तिगत बनाते हैं।

कुछ लोग गहरे विचारक होते हैं।

कुछ में गहरी आध्यात्मिक भूख होती है।

कुछ को प्रकृति में शांति मिलती है।

कुछ नेता या सत्य के खोजी होते हैं।

क्यों?

क्योंकि आपके गोत्र के ऋषि का मन आज भी आपके अंदर गूंजता है।

अगर आपका गोत्र किसी योद्धा ऋषि का है — आपको साहस महसूस होगा।

अगर वह किसी वैद्य ऋषि से है — तो आयुर्वेद या चिकित्सा में रुचि हो सकती है।

यह संयोग नहीं — यह गहराई से जुड़ा प्रोग्राम है।

6. पहले गोत्र के आधार पर शिक्षा दी जाती थी

प्राचीन गुरुकुलों में सबको एक जैसा नहीं सिखाया जाता था।

गुरु का पहला प्रश्न होता था:

"बेटा, तुम्हारा गोत्र क्या है?"

क्यों?

क्योंकि इससे गुरु समझ जाते थे कि छात्र कैसे सीखता है, कौन सी विद्या उसके लिए उपयुक्त है।

अत्रि गोत्र वाला छात्र — ध्यान और मंत्रों में प्रशिक्षित होता।

कश्यप गोत्र वाला — आयुर्वेद में गहराई से जाता।

गोत्र सिर्फ पहचान नहीं, जीवनपथ था।

7. ब्रिटिशों ने इसका मज़ाक उड़ाया, बॉलीवुड ने हंसी बनाई, और हमने इसे भुला दिया

जब ब्रिटिश भारत आए, उन्होंने इसे अंधविश्वास कहा।फिर फिल्मों में मज़ाक बना

"पंडितजी फिर से गोत्र पूछ रहे हैं!" — जैसे यह कोई बेमतलब रस्म हो।

धीरे-धीरे हमने अपने बुजुर्गों से पूछना छोड़ दिया।

अपने बच्चों को बताना छोड़ दिया।

100 साल में 10,000 साल पुरानी व्यवस्था लुप्त हो रही है।

उसे किसी ने खत्म नहीं किया। हमने ही उसे मरने दिया।

8. अगर आप अपना गोत्र नहीं जानते — तो आपने एक नक्शा खो दिया है

कल्पना कीजिए कि आप किसी प्राचीन राजघराने से हों — पर अपना उपनाम तक नहीं जानते।

आपका गोत्र = आपकी आत्मा का GPS है।

सही मंत्र

सही साधना

सही विवाह

सही मार्गदर्शन

इसके बिना हम अपने ही धर्म में अंधे होकर चल रहे हैं।

9. गोत्र की पुकार सिर्फ रस्म नहीं होती

जब पंडित पूजा में आपका गोत्र बोलते हैं, तो वे सिर्फ औपचारिकता नहीं निभा रहे।

वे आपको आपकी ऋषि ऊर्जा से दोबारा जोड़ रहे होते हैं।

यह एक पवित्र संवाद होता है:

"मैं, भारद्वाज ऋषि की संतान, अपने आत्मिक वंशजों की उपस्थिति में यह संकल्प करता हूँ।"

यह सुंदर है। पवित्र है। सच्चा है।

10. इसे फिर से जीवित करो — इसके लुप्त होने से पहले

अपने माता-पिता से पूछो।

दादी-दादा से पूछो।

शोध करो, पर इसे जाने मत दो।

इसे लिखो, अपनी संतानों को बताओ। गर्व से कहो:

आप सिर्फ 1990 या 2000 में जन्मे इंसान नहीं हैं

आप एक ऐसी ज्योति के वाहक हैं जो हजारों साल पहले किसी ऋषि ने जलाई थी।

11. आपका गोत्र = आत्मा का पासवर्ड

आज हम वाई-फाई पासवर्ड, नेटफ्लिक्स लॉगिन याद रखते हैं...

पर अपने गोत्र को भूल जाते हैं।

वो एक शब्द — आपके भीतर की

चेतना

आदतें

पूर्व कर्म

आध्यात्मिक शक्तियां

...सब खोल सकता है।

यह लेबल नहीं — यह चाबी है।

12. महिलाएं विवाह के बाद गोत्र "खोती" नहीं हैं

लोग सोचते हैं कि विवाह के बाद स्त्री का गोत्र बदल जाता है। पर सनातन धर्म सूक्ष्म है।

श्राद्ध आदि में स्त्री का गोत्र पिता से लिया जाता है।

क्योंकि गोत्र पुरुष रेखा से चलता है (Y-क्रोमोज़ोम से)।

स्त्री ऊर्जा को वहन करती है, लेकिन आनुवंशिक रूप से उसे आगे नहीं बढ़ाती।

इसलिए स्त्री का गोत्र समाप्त नहीं होता — वह उसमें मौन रूप से जीवित रहता है।

13. भगवानों ने भी गोत्र का पालन किया

रामायण में श्रीराम और सीता के विवाह में भी गोत्र जांचा गया:

राम: इक्ष्वाकु वंश, वशिष्ठ गोत्र

सीता: जनक की पुत्री, कश्यप गोत्र

जय सिया राम

तर्पण करते समय क्या बोलना चाहिए?

तर्पण करते समय, पितरों को संबोधित करते हुए उनके गोत्र और नाम का उल्लेख करते हुए ₹गोत्रे अस्मत्पितामह (पितामह का नाम) वसुरूपत्तृप्यतमिदं तिलोदकम गंगा जलं वा तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः ₹₹ मंत्र बोलना चाहिए. यह मंत्र पितरों से जल ग्रहण करके तृप्त होने का निवेदन करता है.

तर्पण करने की विधि और मंत्र

1. जल का प्रयोगः- तर्पण के लिए पानी और तिल का प्रयोग करना चाहिए.

2. कुशा और तिल का महत्वः- कुशा भगवान विष्णु का प्रतीक है, और तिल में भी भगवान विष्णु का वास होता है. इससे पितरों को मोक्ष मिलता है और वे प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं.

3. पितरों के लिए मंत्रः- जल अर्पित करते समय अपने गोत्र का नाम लें और फिर संबंधित पितर के लिए कहें: ₹गोत्रे अस्मत्पितामह (पितामह का नाम) वसुरूपत तृप्यतमिदं तिलोदकम गंगा जलं वा तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।"

यह मंत्र पितामह (दादा), माता या अन्य पूर्वजों के लिए उपयुक्त है, बस उनके नाम और संबंध के अनुसार शब्दों को बदलना होगा.

माता के लिए, आप ₹गोत्रे अस्मन्माता (माता का नाम) देवी वसुरूपास्त् तृप्यतमिदं तिलोदकम गंगा जल वा तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः ₹ बोल सकते हैं.

4. एक सामान्य मंत्रः- सभी पितरों के लिए, आप ₹ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः₹ मंत्र का जाप भी कर सकते हैं.

5. उद्देश्यः- तर्पण का मुख्य उद्देश्य पितरों को शांति प्रदान करना और उनका आशीर्वाद प्राप्त करना है.

किडनी फेलियर की शुरुआत है यूरिन में दिखने वाले 2 बदलाव देर होने से पहले कर लें पहचान

समाज सेवा के साथ ही स्वास्थ्य सेवाओं पर विशेष रूप से ध्यान देते हुए अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार ने आम जन सेवा स्वास्थ्य के लिए जागरूक करते हुए बताया कि

किडनी शरीर को टॉक्सिन से फ्री करने के लिए जरूरी मानी जाती है लेकिन जब इसकी फंक्शनिंग धीरे-धीरे कम होने लगती है तो कुछ साइन सामने आते हैं जिन्हें अक्सर लोग नजरअंदाज कर देते हैं। हालांकि इन लक्षणों को समय रहते समझना और डॉक्टर से सलाह लेना बेहद जरूरी है। किडनी हमारे शरीर में बेहद अहम अंगों में से एक है।

ऐसे में इसकी सही देखभाल बेहद जरूरी होती है।

जरा-सी लापरवाही किडनी फेलियर का कारण बन सकती है। हमारी किडनियां शरीर से टॉक्सिन को बाहर निकालने में मदद करती हैं। लेकिन जब किडनियों की फंक्शनिंग धीरे-धीरे कम होने लगती है, तो शरीर में कई छोटे-छोटे संकेत नजर आने लगते हैं, जिन्हें हम सामान्य थकान, उम्र या लाइफस्टाइल से जुड़ी समस्याएं मानकर नजरअंदाज कर देते हैं। यही वजह है कि किडनी डिजीज अक्सर तब पकड़ में आती है जब वह गंभीर स्टेज में पहुंच जाती है। इसलिए जरूरी है कि हम इन शुरूआती संकेतों को पहचानें और समय रहते डॉक्टर से सलाह लें। किडनी खराब होने के कुछ ऐसे ही शुरुआती लक्षणों के बारे में जिनपर ध्यान नहीं दिया जाता है। जैसे

बार-बार पेशाब आना या पेशाब में बदलाव

किडनी की समस्या की शुरुआत पेशाब की आदतों में बदलाव से हो सकती है। रात में बार-बार पेशाब के लिए उठना या पेशाब की मात्रा में कमी-बढ़ोतरी एक संकेत हो सकता है।

पेशाब में झाग या खून आना

अगर पेशाब झागदार हो या उसमें खून नजर आए, तो ये गंभीर संकेत हैं कि किडनी सही से फिल्ट्रेशन नहीं कर रही और प्रोटीन या ब्लड यूरिन के साथ बाहर आ रहा है।

लगातार थकान महसूस होना

किडनी की खराबी से शरीर में एरिथ्रोपॉयटिन नामक हार्मोन की कमी हो जाती है, जिससे रेड ब्लड सेल्स कम बनती हैं और व्यक्ति को थकावट महसूस होती है।

चेहरे या पैरों में सूजन

किडनी सही तरीके से सोडियम और पानी को बाहर नहीं निकाल पाती, जिससे शरीर में सूजन आ सकती है, खासतौर पर चेहरे, टखनों या पैरों में।

भूख न लगना और मतली आना

किडनी जब टॉक्सिन्स को सही तरीके से बाहर नहीं निकाल पाती तो शरीर में ये टॉक्सिन जमा होने लगता है, जिससे मितली, उल्टी और भूख न लगने की समस्या होती है।

सांस लेने में परेशानी

शरीर में फ्लूइड इकट्ठा होने या एनीमिया की वजह से फेफड़ों में ऑक्सीजन कम पहुंचती है, जिससे सांस लेने में दिक्कत हो सकती है।

त्वचा पर खुजली या रूखापन

किडनी अगर सही से वेस्ट को बाहर न निकाल पाए तो शरीर में फॉस्फोरस और अन्य तत्वों का असंतुलन त्वचा पर खुजली, ड्राइनेस या चकत्ते का कारण बन सकता है।

इन लक्षणों को नजरअंदाज करने से आने वाले टाइम में सीरियस किडनी डिजीज का रूप ले सकता है। इसलिए अगर इनमें से कोई भी संकेत लगातार नजर आए, तो बिना देर किए डॉक्टर से जांच कराना जरूरी है। किडनी की सही देखभाल ही आपको स्वास्थ्य रखने में मददगार है। स्वास्थ्य ही जीवन की पूंजी है

घर की पाठशाला

जब पहली बार मुंह खोला।
लब से बस मां ही बोला।।
बचपन में दादा-दादी ,हमें सुनाते कहानी।
हमारी पढ़ाई शुरू हुई ,यूं ही मुंह जबानी ।।
सुनना देखना समझ लिया
पढ़ना लिखना तब आया।
मां के संग आटा थाली में
जब उंगलियों को घुमाया ।।
ननिहाल घर जाने को
उछल उछल हम जाते।
हाव भाव संग नाना नानी
वार्ता हमें सुनाते।।
मामा मामी दोनों के
अलग-अलग होते थे पाठ।
अनगिनत तो चुम्मा देते
गिन गिन के देते डाट।।
मासी की पढ़ाई का
अंदाज रहता निराला।
गणना तो कप से करें
गिलास से दूध पिलाना।।
टॉफी चॉकलेट खिलौने से
मैंने सीखी है गिनती।
सबको नसीब हो ये अवसर
यही है प्रभु से विनती।।
बुजुर्गों के सम्मान से
बढ़ता है खूद का मान।
घर की पाठशाला पर
हम सबको है अभिमान।।

रचनाकार
दिनेश बारोठ दिनेश
शीतला कॉलोनी सरवन जिला रतलाम

14 सितम्बर - राष्ट्रीय हिंदी दिवस पर विशेष
भारतीयों करें हिंदी की वकालत...!

राष्ट्रभाषा यानि आमजन की भाषा,
हिंदी ही करेगी यह पूरी अभिलाषा।
आम बोल-चाल में सब होता साझा,
अपन-तूपन, आएला-जाएला वाचा।
न कोई झिझक हो जाए सब सजग,
प्रेम-स्नेह से बोलता जाए सारा जग।

गाँधी ने हिंदी को 'जनभाषा' बताया,
वर्तमान में अंग्रेजी ने हैं खूब सताया।
हिंदी की अपेक्षा 'अंग्रेजी' का प्रभुत्व,
न करो इसकी उपेक्षा बढ़ाओ महत्व।
अब तक खूब हुई हिंदी की हिकारत,
जागो भारतीयों करें इसकी वकालत।

संजय एम तराणेकर

ध्यान/समाधि उधार नहीं मिल सकती। यह न तो कोई दे सकता है या न ही कोई किसी से ले सकता है।

यह जब किसी में उतरता है तो बिल्कुल शुद्ध/अनछुआ अनुभव बनकर ही उतरता है। हम सबमें वह क्षमता है कि इस अनुभव को अपने भीतर जन्म दे सकें। लेकिन सदा हम रहतें हैं बाहर। बाहर सूचना हैं, दृश्य हैं, आकार-प्रकार हैं जिसमें हम खो जातें हैं। और समाधि तो अरूप है। वह सब आकारों/प्रकारों/विकारों के खो जाने, पर प्राप्त हुई अनुभूति/अनुभव/स्वाद है जो शब्दों में बताया नहीं जा सकता। 'जीया' जा सकता है, लेकिन 'गूंगे के गुड़' की भांति दूसरों को 'जनाया' नहीं जा सकता। इसलिए तो सभी मनीषियों ने मौजिल की बात ही नहीं की। उन्होंने केवल मार्ग की ओर संकेत किये हैं। उन्होंने बस इशारों से बताया कि 'वह वहां है, जाओ और छू लो'। कोई लाकर हमारी झोली में भर नहीं सकता। उसके लिए स्वयं चलना पड़ता है। मार्ग की कठिनाई से गुजरना पड़ता है। और आश्चर्य होगा जानकर कि पहुंचकर पता चलता हो कि कोई मार्ग नहीं था, कोई बाधा भी नहीं थी। जो चुनौतियां थीं भी, वह सब हमने ही क्रियेट कर रखीं थीं। हमने ही अपने को अनेकानेक बंधनों में जकड़ रखा था, जो हम स्वयं ही भूल गये थे। अपने ही बनाये जाल को तोड़ना पीड़ादायक होता है। बस यही पीड़ायें, समाधि की बाधाएं थी जो कोई दूसरा पार नहीं कर सकता। वह सभी बाधायें, हमारी निर्मिति हैं, और हम ही उसे निरसित/निर्जरित कर सकतें हैं।

अगर आप दिल के दौरे या स्ट्रोक से चिंतित हैं, तो इन 8 प्राकृतिक थक्का-विरोधी उपायों के बारे में ज़रूर जानें

आपके शरीर की थक्का जमाने वाली प्रणाली ईंटों (प्लेटलेट्स) की तरह काम करती है, जो सीमेंट (फाइब्रिन) द्वारा एक साथ रखी जाती हैं, लेकिन मैग्नीशियम एक प्राकृतिक रक्त पतला करने वाले के रूप में कार्य करता है, जो ₹सीमेंटर₹ को बहुत अधिक चिपचिपा होने से रोकता है, जबकि जब आप वास्तव में घायल होते हैं, तब भी उचित थक्का जमने देता है!

नट्टोकिनेस, किण्वित सोयाबीन से प्राप्त एक एंजाइम, रक्त के थक्कों को घोलने में इतना प्रभावी है कि यह उसी फाइब्रिन जाल को तोड़कर काम करता है जो आपकी धमनियों और नसों में रुकावट पैदा करता है!

अनानास में ब्रोमेलैन नामक एक शक्तिशाली एंजाइम होता है जो खतरनाक रक्त के थक्के बनाने वाले फाइब्रिन प्रोटीन को तोड़ देता है - इस उष्णकटिबंधीय फल को खाना दिल के दौरे और स्ट्रोक से खुद को बचाने के सबसे सरल तरीकों में से एक हो सकता है।

8 प्रमुख पोषक तत्व (खून के थक्केकम करने वरोकने हेतु):

1. विटामिन E – खून की तरलता व रक्तवाहिनियों को ऑक्सीडेटिव क्षति से बचाता है। (अलसी, बादाम, पालक, सूरजमुखी के बीज)

2. नैटोकिनेज़ (Nattokinase) – फाइब्रिन को तोड़कर थक्के घोलने में मदद; सेरापेप्टेज़ के साथ असर बढ़ता है।

3. विटामिन C – धमनियों की कोलेजन मज़बूती व लचीलापन बनाए रखता है (नींबू, संतरा, कीवी, शिमला मिर्च)।

4. फाइटोकेमिकल्स (लहसुन, अदरक, दालचीनी, लाल मिर्च, हल्दी) – सूजन कम कर, प्लेटलेट जमाव रोकते हैं।

5. ब्रोमेलिन (अनानास का एंज़ाइम) – फाइब्रिन तोड़ता है, सूजन घटाता है।

6. मैग्नीशियम – प्लेटलेट चिपचिपाहट व ब्लड प्रेशर घटाकर थक्के बनने से रोकता, साथ ही ज़रूरत पर clotting भी सपोर्ट करता है।

7. मछली का तेल (ओमेगा-3) – ट्राइग्लिसराइड कम, सूजन घटाकर रक्त प्रवाह सुधारता है।

8. बर्बेरिन – प्लेटलेट्स के चिपकने व फाइब्रिनोजन घटाने से नए थक्कों को रोकता है।

जीवनशैली के 8 प्रमुख उपाय:

1. ताज़ी सब्ज़ी, बीज, मेवे, समुद्री भोजन वाला एंटी-इन्फ़्लेमेटरी आहार लें, प्रोसेस्ड फ़ूड घटाएँ।

2. पर्याप्त धूप लें (विशेषकर लंबी यात्रा से पहले)।

3. धूम्रपान व विषाक्त वातावरण (जैसे घर में फफूंदी) से बचें।

4. पर्याप्त स्वच्छ पानी पीकर हाइड्रेटेड रहें।

5. प्राकृतिक दिन-रात चक्र के अनुसार अच्छी नींद लें।

6. योग, व्यायाम, ध्यान से तनाव घटाएँ।

7. नियमित व्यायाम (विशेषकर बाहर) करें ताकि रक्त प्रवाह अच्छा रहे।

प्रेतों का भोजन

संसार में कोई भी प्राणी बिना भोजन के नहीं रहते, प्रेत क्या आहार करते है, जाने!

"अप्रक्षालितपादस्तु यो भुङ्क्ते दक्षिणामुखः।

यो वेष्टितशिरा भुङ्क्ते प्रेता भुञ्जन्ति नित्यशः।।"

अर्थात:--

1. जहाँ भोजन के समय आपस में कलह होने लगता है - वहाँ उस अन्न के रस को प्रेत खाते हैं।

2. जहाँ मनुष्य बिना लिपी - पुती (पोछा आदि से साफ हुई) धरती पर खाते हैं,

3. जहाँ ब्राह्मण शौचाचार से भ्रष्ट होते हैं वहाँ हम को भोजन मिलता है,

4. जो पैर धोये बिना खाता हैं

5. जो दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन करता है,

6. जो सिर पर वस्त्र लपेट कर भोजन करता है - उसके उस अन्न को सदा हम प्रेत ही खाते हैं।

7. जहाँ रजस्वला स्त्री - चाण्डाल - और सुअर श्राद्ध के अन्न पर दृष्टि डाल देते हैं - वह अन्न पितरों का नहीं हम प्रेतों का ही भोजन होता है,

8. जिस घर में सदा झूठन पडा रहे - निरन्तर कलह होता रहे - और बलिविश्वैदैव न किया जाता हो - वहाँ हम प्रेत लोग भोजन करते हैं।

कैसे घरों में प्रेत प्रवेश नहीं करता?

1. जिस घर में बलिवैश्वदेव होने से धुएं की बत्ती उडती दिखाई देती है - उसमें हम प्रवेश नहीं कर पाते,

2. जिस घर में सवेरे चौका लग जाता है - तथा वेद मंत्रों की ध्वनि होती रहती है- वहाँ की किसी वस्तु पर हमारा अधिकार नहीं होता।

किस कर्म के परिणाम में मनुष्य प्रेत भाव को प्राप्त होता है?

1. जो धरोहर हडप लेते हैं - झूठे मुँह यात्रा करते हैं - गाय और ब्राह्मण की हत्या करने वाले हैं वे प्रेत योनि को प्राप्त होते हैं।

2. चुगली करने वाले -झूठी गवाही देने वाले - न्याय के पक्ष में नहीं रहने वाले - वे मरने पर प्रेत होते हैं।

3. सूर्य की ओर मुँह करके थूक - खकार - और मल - मूत्र त्याग करते हैं - वे प्रेत शरीर प्राप्त करके दीर्घकाल तक उसी में स्थित रहते हैं

4. गौ - ब्राह्मण तथा रोगी को जब कुछ दिया जाता हो - उस समय जो न देने की सलाह देते हैं - वे भी प्रेत ही होते हैं

5. शूद्र का अन्न पेट में रहते हुए ब्राह्मण की मृत्यु हो जाये तो वह अत्यंत भयंकर प्रेत होता है

6. जो अमावस्या की तिथि में हल में बैलों को जोतता है वह मनुष्य प्रेत बनता है।

7. जो विश्वासघाती - ब्रह्महत्यारा - स्त्रीवध करने वाला - गोघाती - गुरूघाती - और पितृहत्या करने वाला है वह मनुष्य भी प्रेत होता है।

8. मरने पर जिसके १६ एकोदिष्ट श्राद्ध नहीं किये गये हैं - उसको भी प्रेतयोनि प्राप्त होती है।

गांठ

स्तन की गांठ, लिपोमा, सिर पर गांठ, बगल में फोड़ा, गले मे गांठ, पेट मे गांठ, महिलाओं के गर्भाशय में गांठ या कोई भी गांठ हो।

1. चूना अकेले ही कोई भी गांठ गला देता है.

2. कचनार की छाल और गोरखमुंडी:- कचनार की ताजी छाल 25-30 ग्राम (सुखी छाल 15 ग्राम) को मोटा मोटा कूट ले। 1 गिलास पानी मे उबाले। जब 2 मिनट उबल जाए तब इसमे 1 चम्मच गोरखमुंडी (मोटी कुटी या पीसी हुई) डाले। इसे 1 मिनट तक उबलने दे। छान ले। हल्का गरम रह जाए तब पी ले। ध्यान दे यह कड़वा है परंतु चमत्कारी है। गांठ कैसी ही हो, प्रोस्टेट बढ़ी हुई हो, जांघ के पास की गांठ हो, काँख की गांठ हो गले के बाहर की गांठ हो, गर्भाशय की गांठ हो, स्त्री पुरुष के स्तनो मे गांठ हो या टॉन्सिल हो, गले मे थायराइड ग्लैण्ड बढ़ गई हो (Goiter) या LIPOMA (फैट की गांठ) हो लाभ जरूर करती है। कभी भी असफल नहीं होती। अधिक लाभ के लिए दिन मे 2 बार ले। लंबे समय तक लेने से ही लाभ होगा। 20-25 दिन तक कोई

लाभ नहीं होगा निराश होकर बीच मे न छोड़े।

3. आकडे का दूध (Figures Milk):- आकड़े के दूध में मिट्टी भिगोकर लेप करे।

4. निर्गुण्डी (Nirgundi):- गेहूँ के आटे में पापड़खार तथा पानी डालकर पुल्टिस बनाकर लगाने से न पकने वाली गाँठ पककर फूट जाती है तथा दर्द कम हो जाता है।

5. गण्डमाला की गाँठें (Goitre):- कोंच के बीज को घिस कर दो तीन बार लेप करने तथा गोरखमुण्डी के पत्तों का आठ-आठ तोला रस रोज पीने से गण्डमाला (कंठमाला) में लाभ होता है। तथा कफवर्धक पदार्थ न खायें।

6. काँखफोड़ा (बगल मे होने वाला फोड़ा):- कुचले को पानी में बारीक पीसकर थोड़ा गर्म करके उसका लेप करने से या अरण्डी का तेल लगाने से या गुड़, गुग्गल और राई का चूर्ण समान मात्रा में लेकर, पीसकर, थोड़ा पानी मिलाकर, गर्म करके लगाने से काँखफोड़े में लाभ होता है।

राजधानी में आईएपीएमआर मध्यावधि सीएमई 2025 का शुभारंभ, देश विदेश से आए लगभग 40 विशेषज्ञों ने दिए व्याख्यान

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य – पुनर्वास चिकित्सा के क्षेत्र में व्यावसायिक प्रशिक्षण और अद्यतन जानकारी को सुलभ बनाना

नई दिल्ली : भारत में विकलांगता न केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक चुनौती है, बल्कि यह राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली के लिए भी एक गंभीर विषय बनकर उभरी है। जहां एक ओर विकलांग बच्चों की संख्या में वृद्धि चिंताजनक है, वहीं दूसरी ओर बुजुर्गों को गतिशीलता से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन दोनों आयुवर्गों के लिए पुनर्वास चिकित्सा अब पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक और आवश्यक बन चुकी है।

इन्हीं चिंताओं को केंद्र में रखते हुए राजधानी में आईएपीएमआर मध्यावधि सीएमई 2025 का शुभारंभ किया गया, जिसका उद्घाटन भारत सरकार की स्वास्थ्य सेवाओं की महानिदेशक डॉ. सुनीता शर्मा और सशस्त्र बल चिकित्सा सेवाओं की निदेशक सर्जन, वाइस एडमिरल आरती सरीन (एवीएसएम, वीएसएम) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। दो दिवसीय इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य है पुनर्वास चिकित्सा के क्षेत्र में व्यावसायिक प्रशिक्षण और अद्यतन जानकारी को सुलभ बनाना।

इस वर्ष सम्मेलन की थीम रहीः ₹पहले कदम से स्वर्णिम वर्षों तकः जीवन भर पुनर्वास को आगे बढ़ाना₹, जो जीवन के हर चरण में पुनर्वास की भूमिका और आवश्यकता को रेखांकित करता है। कार्यक्रम में देश विदेश से आए लगभग 40 विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए और चिकित्सकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया।

पूर्व महानिदेशक डॉ. आर.के. श्रीवास्तव और डॉ. एस.वाई. कोठारी ने अपने विचार साझा करते हुए इस बात पर बल दिया कि भारत को पुनर्वास सेवाओं में सुदृढ़ आधारभूत संरचना और मानव संसाधन की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात की सराहना की कि अब राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (NMC) और राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड (NBE) द्वारा पीएमआर (Physical Medicine & Rehabilitation) को एमडी स्तरीय प्रशिक्षण में मान्यता मिल चुकी है और स्नातक स्तर पर भी इसे चिकित्सा पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा रहा है।

कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. अजय गुप्ता ने नीति निर्माताओं के सतत सहयोग का आभार जताते हुए कहा, "तकनीकी विकास और जन अपेक्षाओं के साथ तालमेल बिठाने के लिए चिकित्सकों का कौशल विकास अत्यावश्यक है। एनसीआर के सभी प्रमुख संस्थानों में इस दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं।"

इस सम्मेलन को अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण भी प्राप्त हुआ जब ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड की पुनर्वास चिकित्सा सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. स्टीवन फॉक्स ने स्ट्रोक पुनर्वास और दर्द प्रबंधन में वैश्विक प्रगति को रेखांकित किया।

आईएपीएमआर के अध्यक्ष डॉ. मुरलीधरन पी.सी. ने अपने संबोधन में कहा कि, "पीएमआर अब एक सशक्त और प्रतिस्पर्धी विशेषज्ञता के रूप में उभरा है, जो न केवल दिव्यांगजनों को कार्यात्मक स्वतंत्रता दिलाने में सहायक है, बल्कि उनके अधिकारों की प्रभावी वकालत भी करता है।" उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि संसाधनों की सीमाओं के बावजूद इस क्षेत्र ने उल्लेखनीय प्रगति की है।

देशभर में मात्र 1,000 प्रशिक्षित पीएमआर विशेषज्ञ होने के बावजूद, यह क्षेत्र राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति के तहत एक आवश्यक स्तंभ के रूप में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर चुका है। यह न केवल चिकित्सा विज्ञान की आवश्यकता है, बल्कि एक सामाजिक दायित्व भी बन चुका है, एक ऐसा सेतु जो बचपन की जटिलताओं से लेकर बुज़ुर्गावस्था की चुनौतियों तक, हर चरण में जीवन को फिर से गतिशील बनाने का कार्य कर रहा है।

ए.एस.ए.पी. एक बार फिर छात्र चुनाव से भागी साफ है 11 साल बाद भी अरविंद केजरीवाल शिक्षित युवा की पसंद नही -- दिल्ली भाजपा अध्यक्ष

सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की आम आदमी पार्टी की छात्र इकाई द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के चुनाव में ना उतरने की घोषणा अरविंद केजरीवाल एवं सौरभ भारद्वाज की निजी हार है।

हाल ही में ए.बी.वी.पी. पंजाब विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव जीती थी जिसको पंजाब के युवाओं के ₹आपश्र की छात्र इकाई से दूरी का प्रमाण माना जा रहा था और अब ए.एस.ए.पी. एक बार फिर दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव से भागी जो साफ करता है की 11 साल बाद भी अरविंद केजरीवाल शिक्षित युवा की पसंद नही हैं। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की "आप" का छात्र संघ चुनाव से भागना अरविंद केजरीवाल एवं सौरभ भारद्वाज की निजी हार है क्योंकि सौरभ भारद्वाज ने गत कुछ माह में छात्र इकाई को लेकर अनेक प्रेस कांफ्रेंस तो की ही थीं, वह सामान्य राजनीतिक प्रेस कांफ्रेंस में भी ए.एस.ए.पी. का बिल्ला पहन कर बैठते थे और चुनाव लड़ने की घोषणा की थी। अब अचानक "आप" का यू टर्न दिल्ली के युवाओं की अरविंद केजरीवाल से दूरी का संकेत तो है ही साथ ही बैक डोर से कांग्रेस की छात्र इकाई के साथ खड़ा होना भी है।

हिंदी भाषा का अस्तित्व ही हमारी अस्मिता और संस्कृति का प्रमाण है...

हिंदी दिवस हमारे देश का गौरवशाली पर्व है, क्योंकि हिंदी केवल भाषा नहीं बल्कि भारत की आत्मा और संस्कृतियों को जोड़ने वाला सूत्र है। ₹हिंदी हमारी संस्कृति की आत्मा है, इसे खोकर हम अपनी पहचान खो देंगे।₹ यह उद्धरण हमें याद दिलाता है कि भाषा का अस्तित्व ही हमारी अस्मिता और संस्कृति का प्रमाण है। हिंदी वह भाषा है जो देश के कोने-कोने में बोली जाती है और करोड़ों भारतीयों के दिलों में बसती है। यह मातृभाषा होने के साथ-साथ वह सेतु भी है जो विभिन्न प्रदेशों, बोलियों और परंपराओं को एक सूत्र में पिरोता है। हिंदी का इतिहास बेहद गौरवशाली है, इसकी जड़ें संस्कृत और प्राकृत भाषाओं में हैं, और समय के साथ विकसित होती हुई यह आज भारत की राजभाषा के रूप में स्थापित है।

हिंदी साहित्य ने हमारे समाज को नई दिशा दी है। तुलसीदास ने भक्ति और मर्यादा का आदर्श स्थापित किया, सूरदास ने वात्सल्य और अनुराग का अमृत बाँटा, कबीर ने दोहों में जीवन की गहन सच्चाइयाँ उजागर कीं, मीरा ने समर्पण और प्रेम का स्वर दिया, रहीम ने नीति और जीवन-दर्शन सिखाया, और भारतेंदु हरिश्चंद्र ने आधुनिक हिंदी को राष्ट्रजागरण और नवजागरण का स्वर प्रदान किया। इस परंपरा ने न केवल साहित्य को उजागर किया बल्कि समाज की चेतना को भी जगाया। ₹हिंदी केवल शब्दों की भाषा नहीं, यह भारत की लय, ताल और धड़कन है।₹ यह विचार हमें बताता है कि हिंदी मात्र बोली नहीं, बल्कि हमारे जीवन की संवेदनाओं और भावनाओं की धारा भी है।हिंदी की विशेषता इसका सरल और सहज स्वरूप है। इसकी बोलियाँ जैसे अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली, बुंदेली आदि इसकी व्यापकता का परिचायक हैं। आज हिंदी केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर भी अपनी पहचान बना चुकी है। प्रवासी भारतीयों ने हिंदी का परचम ब्रिटेन, अमेरिका, मॉरीशस, फिजी, खाड़ी देशों और अफ्रीका तक फैलाया है। विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या करोड़ों में है और इंटरनेट, मोबाइल तथा डिजिटल मंचों पर हिंदी सामग्री सबसे तेजी से बढ़ रही है। इस युग में हिंदी की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ गई है।आज हिंदी दिवस पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम हिंदी को केवल अपने बोलचाल या औपचारिक प्रयोग तक सीमित न रखें, बल्कि इसे संस्कृति और साहित्य से जोड़कर अपनी आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाएं। ₹हिंदी दिवस मनाना केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि अपनी आत्मा, संस्कृति और अस्मिता को संभालने का संकल्प है।₹ इन शब्दों के साथ हमें यह समझना चाहिए कि हिंदी का सम्मान और संरक्षण ही हमारी राष्ट्रीय एकता और आत्मसम्मान का मूल है।₹हिंदी वह सूर्य है जिसकी रोशनी भारतीयता को उजागर करती है।₹ इसलिए इस हिंदी दिवस पर आइए हम सब मिलकर संकल्प लें कि हिंदी को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएंगे, गर्व से अपनाएँगे और विश्व मंच पर इसके गौरव को और

ऊँचाइयों तक पहुँचाएँगे।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़
हरदा, मध्य प्रदेश

"हिंदी,,हमारी धरोहर, हमारी अस्मिता"

"हिंदी हमारी संस्कृति की आत्मा है, इसे खोकर हम अपनी पहचान खो देंगे।"
"जिस देश की भाषा जीवित रहती है, वही देश सदैव अमर रहता है।"
"हिंदी बोलना केवल भाषा बोलना नहीं है, यह दिल से दिल को जोड़ने का माध्यम है।"
"हिंदी राष्ट्र की एकता का वह सूत्र है जो विविधताओं को संगति में पिरोता है।"
"हिंदी केवल शब्दों की भाषा नहीं, यह भारत की लय, ताल और धड़कन है।"
"हिंदी दिवस मनाना केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि अपनी आत्मा, संस्कृति और अस्मिता को संभालने का संकल्प है।"
"हिंदी हमारी धरोहर है, हमें इसे विरासत की तरह संजोकर अगली पीढ़ी तक पहुंचाना है।"
"हिंदी वह सूर्य है जिसकी रोशनी भारतीयता को उजागर करती है।"

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज
हरदा मध्य प्रदेश

क्राइम ब्रांच की टीम ने एक आरोपी को हथियार के साथ गिरफ्तार किया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्लीः अवैध हथियारों के खिलाफ अपने सतत अभियान को जारी रखते हुए, दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा (एनआर-1) ने एक आरोपी आकाश पुत्र परमेश्वरी दयाल, निवासी सेक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली, उम्रः 21 वर्ष को गिरफ्तार किया है और उसके कब्जे से एक अत्याधुनिक पिस्तौल और 2 जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। इस त्वरित कार्रवाई ने शहर में एक संभावित आपराधिक घटना को टलने में मदद की है। 9 सितंबर को, सिपाही विवेक राणा द्वारा प्राप्त गुप्त सूचना के आधार पर, जिसे निरीक्षक संजय कौशिक के नेतृत्व वाली टीम ने और विकसित किया, गंदा नाला, केएनके मार्ग, सेक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली के पास छापा मारा गया।

उप निरीक्षक नरेंद्र सिंह, सहायक उप निरीक्षक हुकम चंद, सहायक उप निरीक्षक वीरेंद्र सिंह, सहायक उप निरीक्षक रमेश राणा, प्रधान सिपाही संजीव कुमार, प्रधान सिपाही धारा सिंह और सिपाही विवेक राणा सहित एक छापा मारने वाला दल श्री अशोक कुमार शर्मा, सहायक आयुक्त पुलिस/एनआर-1 के निकट पर्यवेक्षण में, श्री हर्ष इंदौरा, भा.पु.से., उपायुक्त पुलिस/अपराध शाखा के समग्र पर्यवेक्षण में गठित किया गया। छापेमारी के दौरान, आरोपी को गंदा नाला, सेक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली के पास से गिरफ्तार किया गया।

आरोपी अपने माता-पिता के साथ रहता है; उसके पिता रिक्शा चलाते हैं। उसने बी.ए. प्रथम वर्ष तक पढ़ाई की, लेकिन रुचि न होने के कारण 2017 में पढ़ाई छोड़ दी। वह अविवाहित है और उसकी एक बड़ी बहन निजी क्षेत्र में कार्यरत है।

खराब आर्थिक स्थिति और बुरी संगत के कारण, वह आपराधिक गतिविधियों में शामिल हो गया। 2024 में, उसने अपने साथी राहुल यादव के साथ मिलकर पीतमपुरा टीवी टावर के पास 25 लाख रुपये की डकैती की, जिसमें उसके हिस्से से ₹3,00,000/- बरामद हुए। जेल से रिहा होने के बाद, वह फिर से आपराधिक गतिविधियों में लिप्त हो गया। दो महीने पहले, उसने शाहाबाद निवासी अपने साथी लल्ला के माध्यम से अयोध्या (उत्तर प्रदेश) के पास एक गाँव के निवासी सत्यम उर्फ सौरव से ₹58,000/- में एक अत्याधुनिक पिस्तौल और 10 ज़िंदा कारतूस खरीदे। बरामद हथियार के साथ पकड़े जाने पर वह एक और अपराध करने की योजना बना रहा था। उसके अन्य साथियों और हथियार के स्रोत का पता लगाने के प्रयास जारी हैं। दिल्ली पुलिस अपराध शाखा राष्ट्रीय राजधानी में अवैध आग्नेयास्त्रों के खतरे को रोकने और शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है। अवैध हथियारों की खरीद, कब्जे और उपयोग में शामिल व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी। यह तमाम जानकारियां हर्ष इंदौरा, पुलिस उपायुक्त अपराध शाखा, दिल्ली ने अपनी एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह तमाम जानकारी दी है।

छत्तीसगढ़ी पारिवारिक फिल्म "जिंदगी पहाही तोर संग" की शूटिंग अंतिम दौर में

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। छत्तीसगढ़ी सिनेमा प्रेमियों के लिए बड़ी खुशखबरी है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति, परंपरा और कला को समर्पित एक नई पारिवारिक फिल्म ₹जिंदगी पहाही तोर संग₹ की शूटिंग बालको क्षेत्र में जोर-शोर से चल रही है। यह फिल्म इमोशनल, ड्रामा और मनोरंजन का बेहतरीन संगम प्रस्तुत करते हुए पूरे परिवार के लिए दिलचस्प अनुभव देने जा रही है।

फिल्म की कहानी व निर्माण का जिम्मा छत्तीसगढ़ी समाजसेवी व फिल्म निर्माता क्षमा पाटले ने उठाया है। उन्होंने ही फिल्म की कहानी भी लिखी है। निर्देशक की भूमिका में क्रांति शर्मा हैं, जो छत्तीसगढ़ी सिनेमा में अपनी विशेष पहचान बना चुके हैं।

इस फिल्म में छत्तीसगढ़ी सिनेमा के जाने-माने कलाकारों ने भाग लिया है। प्रमुख कलाकारों में आयुष राजवैद, दीपिका सिंह, रामेश्वरी पटनायक, मनोज जोशी, विनय अंबष्ट, बबली महंत, विक्रम राज, सरला सेन, नरेंद्र चंदेल, तरुण बघेल, अंशु चौबे, सिद्धार्थ कुर्रे, पहेली चौहान, पुष्पा रोज, नागेश ठाकुर, पुरुषोत्तम कश्यप, साहेब लाल साहू, चारु दुबे, नरेंद्र काबरा, अजय पाटले, शांडिल्य जी, सीमा तिवारी, लक्ष्मण दास, प्रतिभा कुजूर, सौम्या, शैलेन्द्री परिहार, वर्षा, चिंटू मानिकपुरी, राठौर शामिल हैं।

फिल्म की तस्वीरों को संजोने का कार्य रवि नारायण बेहरा कर रहे हैं। साथ ही गीतकार के रूप में क्षमा पाटले, सोना दास और राघवेंद्र वैष्णव ने अपनी कलम से संगीतबद्ध गीत तैयार किए हैं। गायक और गायिकाओं में सुनील सोनी, चंपा निषाद, दीक्षा, ज्योति कंवर, अनुराग शर्मा शामिल हैं।

यह फिल्म छत्तीसगढ़ी समाज की रंगीनी, लोकसंस्कृति, पारिवारिक रिश्तों की गहराई और संघर्ष की भावनात्मक कहानी को पर्दे पर जीवंत रूप में प्रस्तुत करेगी। फिल्म का उद्देश्य छत्तीसगढ़ के रीति-रिवाज, लोकगीत, पहनावा, परंपराएं व सामाजिक संदेश को हर घर तक पहुंचाना है। निर्माण टीम की क्षमा पाटले का कहना है कि यह फिल्म दर्शकों के दिल को छूते हुए उन्हें सामाजिक जुड़ाव की अनुभूति कराएगी। जल्द ही इसकी रिलीज डेट और प्रमोशन अभियान की घोषणा की जाएगी। जिंदगी पहाही तोर संगर छत्तीसगढ़ी सिनेमा में एक नया अध्याय जोड़ने जा रही है। सिनेप्रेमी बेसब्री से इसकी रिलीज का इंतजार कर रहे हैं।

भाजपा मेयर अपना ऑफिस साफ नहीं कर पाए, दिल्ली को कूड़े से आजादी क्या दिलाएंगे ?- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने शनिवार को सिविक सेंटर के विभिन्न विभागों में लगे कूड़े के अंबार को लेकर भाजपा सरकार को आड़े हाथ लिया। उन्होंने कहा कि जब भाजपा मेयर राजा इकबाल सिंह अपने ऑफिस को साफ नहीं कर पाए, तो वो दिल्ली को कूड़े से आजादी क्या दिलाएंगे? एक अगस्त को मेयर ने सिविक सेंटर एमसीडी मुख्यालय ऑफिस में रद्दी कागजों को साफ कर दिल्ली को कूड़ा मुक्त करने का वादा किया था। सफाई अभियान भी खत्म हो गया, लेकिन हर तरफ कूड़े का अंबार लगा हुआ है। सीएम रेखा गुप्ता और मेयर राजा इकबाल सिंह ने दिल्ली को कूड़े से आजादी का नहीं, दिल्ली में कूड़े को आजादी का कैंपेन चलाया था। उन्होंने शनिवार को कहा कि एमसीडी के कार्यालय में महापौर राजा इकबाल सिंह आए थे। यहां के 17 फ्लोर पर स्थित वेटनरी सर्विसेज डिपार्टमेंट में आकर दिल्ली में कूड़े से आज़ादी अभियान चलाया था। उन्होंने कहा था कि हमारे ऑफिस के साथ-साथ दिल्ली के अंदर जितनी भी रद्दी पड़ी है, सबको हटाकर हम स्वच्छता का संदेश देंगे। उन्होंने अखबार की कटिंग दिखाते हुए कहा कि महापौर ने निगम मुख्यालय में रद्दी और ई वेस्ट को हटाकर स्वच्छता का संदेश दिया था।

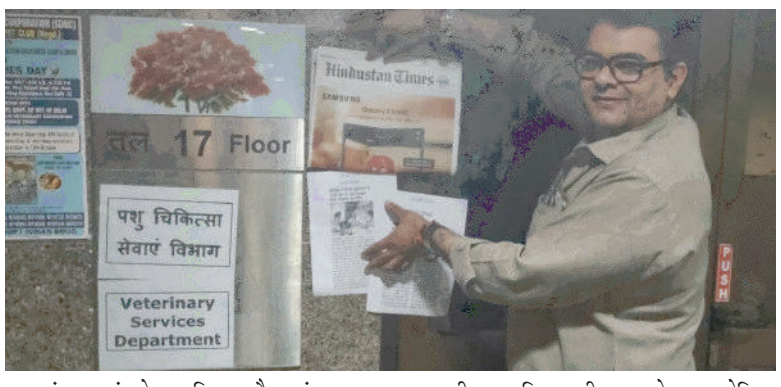

अंकुश नारंग ने कहा कि महापौर यहां पर आए और इन्होंने कहा दिल्ली में कूड़े से आज़ादी अभियान के तहत हम अपने ऑफिस के अंदर से भी यह अभियान चलाएंगे। लेकिन आज हम उसी 17 फ्लोर पर हैं, आज तक जो महापौर अपना ऑफिस नहीं साफ करा पाया। सिर्फ एक न्यूज़ बनाने के लिए आए और वापस चले गये। महापौर ने कहा था कि हम एमसीडी मुख्यालय से रद्दी हटाएंगे, साथ ही 12 जोनों के ऑफिस से भी रद्दी और अन्य कचरा मुक्त करेंगे। लेकिन सच्चाई ये है कि यह सिर्फ न्यूज़ पेपर में छापने के लिए था। उन्होंने कहा कि आज एक महीना 12 दिन हो गए, भाजपा वालों का दिल्ली में कूड़े से आज़ादी का अभियान भी खत्म हो गया। लेकिन महापौर राजा इकबाल सिंह ने वापस आकर यहां एमसीडी मुख्यालय में नहीं देखा। यहां कूड़े, फाइलों और रद्दी का अभी भी अंबार लगा हुआ है, जितनी फाइल पहले थी उससे और ज्यादा हो गई। अंकुश नारंग ने कूड़े से आजादी अभियान को विफल बताते हुए कहा कि भाजपा के महापौर राजा इकबाल सिंह और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता दोनों ने मिलकर दिल्ली में कूड़े से आज़ादी कैंपेन चलाया। लेकिन सब देख सकते हैं जिस ऑफिस में खुद राजा इकबाल सिंह फाइलों को लेकर अपनी तस्वीरें खिंचवा के गए, वहीं इतना ज्यादा कूड़ा इकठ्ठा है, इतनी गंदगी है।

जयराम निषाद की वीरता पर भारत जाटव समाज की पहल, गृह सचिव से मिला प्रतिनिधिमंडल, वीरता सम्मान की मांग

जयराम निषाद जैसे युवाओं की बहादुरी समाज के लिए प्रेरणास्रोत है, ऐसे साहसी नागरिकों को उचित सम्मान देना न केवल उनके साहस को मान्यता देना है, बल्कि यह अन्य युवाओं को भी राष्ट्रसेवा और मानवता के लिए प्रेरित करता है।"– उपेंद्र सिंह

लखनऊ/आगरा, संजय साग़र सिंह। भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष और वरिष्ठ भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने शुक्रवार को प्रदेश के गृह सचिव से मुलाकात कर जयराम निषाद को वीरता सम्मान देने की मांग रखी। उपेंद्र सिंह के साथ समाज के प्रदेश अध्यक्ष नेत्रपाल सिंह भी मौजूद रहे। प्रतिनिधिमंडल ने गृह सचिव को आगरा जिले के ग्राम मेहरा नाहरगंज (कबीस) निवासी जयराम निषाद की असाधारण बहादुरी से अवगत कराया।

दरअसल, जयराम निषाद ने यमुना नदी की प्रबल धारा में कूदकर डूब रहे दो युवकों की जान बचाई, और अद्वितीय साहस व मानवता का परिचय दिया। यह घटना न केवल क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई है, बल्कि जयराम को स्थानीय स्तर पर 'नायक' के रूप में भी देखा जा रहा है।

उपेंद्र सिंह ने गृह सचिव से मुलाकात के दौरान कहा, "जयराम निषाद जैसे युवाओं की बहादुरी समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। ऐसे साहसी नागरिकों को उचित सम्मान देना न केवल उनके साहस को मान्यता देना है, बल्कि यह अन्य युवाओं को भी राष्ट्रसेवा और मानवता के लिए प्रेरित करता है।"

गृह सचिव ने मामले को गंभीरता से लेते हुए तत्काल आगरा के जिलाधिकारी अरविंद मल्लप्पा बंगारी से फोन पर बातचीत की और जयराम निषाद को वीरता सम्मान दिलाने के संबंध में आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

इस पहल को समाज के विभिन्न वर्गों से सराहना मिल रही है। सामाजिक संगठनों का मानना है कि यदि ऐसे नागरिकों को प्रोत्साहन और सम्मान दिया जाए, तो समाज में सकारात्मकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को बल मिलेगा।

फ़न वे लर्निंग एनजीओ की डायरेक्टर गुरजीत कौर का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया और भरपूर मात्रा में लंगर बाँटा गया।

रिद्मशाला – ताल से आत्मबल, अनुशासन और समाज से जुड़ाव का सफर

लेखिका – प्रियांका

आज का समय तेज़ी से बदल रहा है। डिजिटल दुनिया ने अवसरों की कोई कमी नहीं छोड़ी, लेकिन साथ ही बढ़ते मानसिक दबाव, असंतुलित जीवनशैली और अकेलेपन जैसी समस्याएँ भी सामने आई हैं। ऐसे समय में युवाओं को सिर्फ करियर बनाने की नहीं, बल्कि अपने मन, शरीर और आत्मा को संतुलित रखने की भी उतनी ही आवश्यकता है। इसी सोच से प्रेरित होकर अंकुर शरण ने रिद्मशाला की शुरुआत की – एक ऐसा मंच जो युवाओं को संगीत, ताल और लय के माध्यम से अपनी अंतर्निहित शक्ति को पहचानने, अनुशासन अपनाने और समाज से जुड़ने का रास्ता दिखाता है।

रिद्मशाला केवल संगीत सीखने की जगह नहीं है। यह एक ऐसी यात्रा है, जहाँ छात्र और युवा अपने मन की उलझनों को समझते हैं, अपने शरीर की ऊर्जा को सही दिशा में लगाना सीखते हैं और मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने का अभ्यास करते हैं। अंकुर शरण का मानना है कि ताल केवल संगीत में नहीं, जीवन में भी बेहद ज़रूरी है। जब हम अपने दिन की शुरुआत और हर गतिविधि को एक लय में ढालते हैं, तो आत्मविश्वास बढ़ता है, धैर्य विकसित होता है और तनाव कम होता है।

दिल्ली एनसीआर के विभिन्न हिस्सों में आयोजित कार्यशालाओं के ज़रिए हजारों युवाओं ने यह अनुभव किया है कि संगीत केवल मनोरंजन नहीं बल्कि जीवन जीने की कला है। यहाँ एक साथ बैठकर अभ्यास करते हुए बच्चे और युवा टीम भावना, सहयोग, धैर्य और आत्म-संयम सीखते हैं। यह मंच उन्हें अपने आसपास के लोगों से जुड़ने, साझा लक्ष्य की ओर बढ़ने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की प्रेरणा देता है।

अंकुर शरण युवाओं से कहते हैं – "अपने जुनून को पहचानो, उसे अपनी दिनचर्या में शामिल करो और अनुशासन के साथ आगे बढ़ो। ताल का अभ्यास आपको मानसिक रूप से मजबूत बनाता है, आपको धैर्य देता है और आत्मनिर्भरता का रास्ता दिखाता है।" चाहे कोई खेल में अपना करियर बनाना चाहे, पढ़ाई में संतुलन लाना चाहे या तनाव से बाहर निकलना – ताल की लय जीवन के हर मोर्चे पर सहारा देती है।

रिद्मशाला का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास नहीं, बल्कि सामूहिक उत्थान है। जब युवा मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं, तो वे समाज की समस्याओं को समझते हैं और समाधान खोजने में आगे आते हैं। यही कारण है कि यह पहल युवाओं को अपने आसपास के लोगों से संवाद करने, सहयोग करने और मिलकर समाज में बदलाव लाने की प्रेरणा देती है।

आज जब हर कोई अपने संघर्षों से अकेले जूझ रहा है, रिद्मशाला एक संदेश देती है – "तुम अकेले नहीं हो। अपनी लय खोजो, साथ चलो और एक नए समाज की नींव रखो।" अंकुर शरण का सपना है कि हर युवा अपनी अंदरूनी ताकत को पहचाने और उसे समाज की भलाई में लगाए। अनुशासन, आत्मविश्वास और मानसिक स्वास्थ्य – ये तीन स्तंभ मिलकर एक मजबूत व्यक्तित्व बनाते हैं, और यही किसी स्वस्थ समाज की असली पहचान है।

रिद्मशाला युवाओं को न केवल संगीत के सुर से जोड़ती है, बल्कि जीवन के हर कदम पर ताल बनाए रखना सिखाती है। यही ताल उन्हें व्यक्तिगत सफलता से आगे बढ़कर सामाजिक जिम्मेदारी की ओर ले जाती है। आइए, हम सब इस पहल का हिस्सा बनें, अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाएँ और अपने समाज को एक नई लय और नई पहचान दें।

भागवत निवास में धूमधाम से मनाया गया संत राम कृष्ण दास महाराज (सिद्ध पण्डित बाबा) का तिरोभाव महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रमणरेती रोड़ स्थित भागवत निवास में प्रख्यात संत राम कृष्ण दास महाराज (सिद्ध पण्डित बाबा) का तिरोभाव महोत्सव संतों व विद्वानों की सन्निधि में अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ मनाया गया।इस अवसर पर पूज्य महाराजश्री के चित्रपट का श्रीहरिनाम संकीर्तन के मध्य पूजन अर्चन किया गया।साथ ही उनकी आरती की गई।तत्पश्चात आयोजित सन्त-विद्वत सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री महाराज ने कहा कि संत राम कृष्ण दास महाराज (सिद्ध पण्डित बाबा) गौडीय संप्रदाय की बहुमूल्य निधि थे।वे बालपन से ही अद्भुत व विलक्षण थे।

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि संत राम कृष्ण दास महाराज (सिद्ध पण्डित बाबा) जब 4 से 5 वर्ष के थे, तब वे ठाकुर गोविन्द देव मन्दिर (जयपुर) के प्रांगण में खेलने जाते थे।उन पर प्रसन्न होकर ठाकुर श्री गोविन्द देव भगवान उनके साथ खेला करते थे।

सन्त रामदास महाराज (अयोध्या) ने कहा कि राम कृष्ण दास महाराज (सिद्ध पण्डित बाबा) अत्यंत सिद्ध व उच्च

कोटि के संत थे।वे सभी संतों के मुकुटमणि थे। उनके तपोबल व साधना के प्रताप से भागवत निवास आज भी निरन्तर प्रभु भक्ति का प्रचार-प्रसार कर असंख्य व्यक्तियों को धर्म के मार्ग से जोड़कर उनका कल्याण कर रहा है।

सन्त विद्वत सम्मेलन में भागवत निवास के अध्यक्ष महंत शुकदेव दास महाराज, अंतरराष्ट्रीय वृद्ध जन सम्मान समिति (रिस्पैक्ट एज) के संस्थापक डॉ. गिरीश गुप्ता, गौडीय संप्रदाय के प्रकांड विद्वान डॉ. अच्युत लाल भट्ट, सिंहपौर हनुमान मंदिर के महंत सुंदर दास महाराज, राधाकुंड के महंत केशव दास महाराज, महंत सत्यनारायण, महंत जयराम दास महाराज, सन्त निधि बाबा महाराज, भागवताचार्य पुंडरीक कृष्ण महाराज, डॉ. राधाकांत शर्मा, सुमित अग्निहोत्री आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।महोत्सव का समापन सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।महोत्सव में पधारे सभी अतिथियों का स्वागत-सम्मान और धन्यवाद ज्ञापन संत जुगल बाबा और परम वैष्णव हेमांग कृष्ण नांगिया ने किया।

संदिग्ध परिस्थितियों में पेड़ पर लटका मिला 14 दिन से लापता किशोर का शव

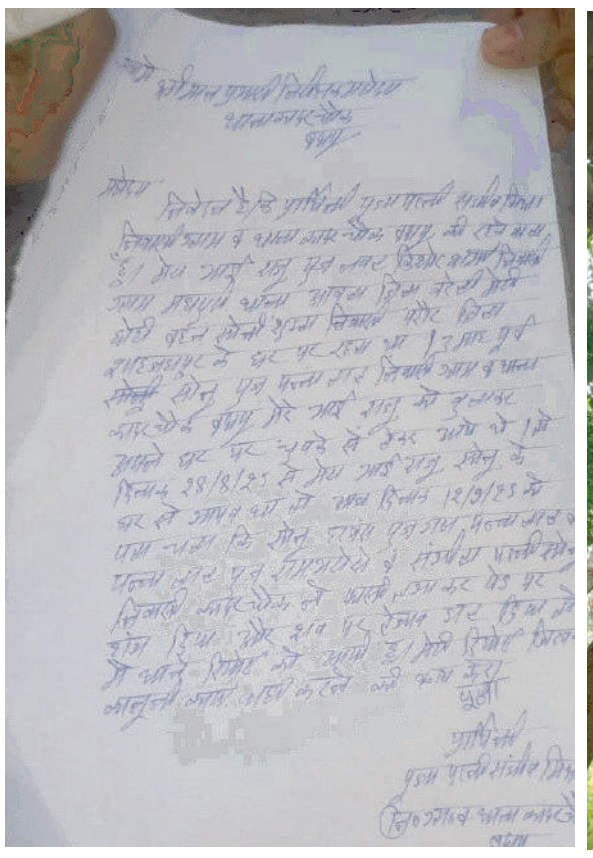

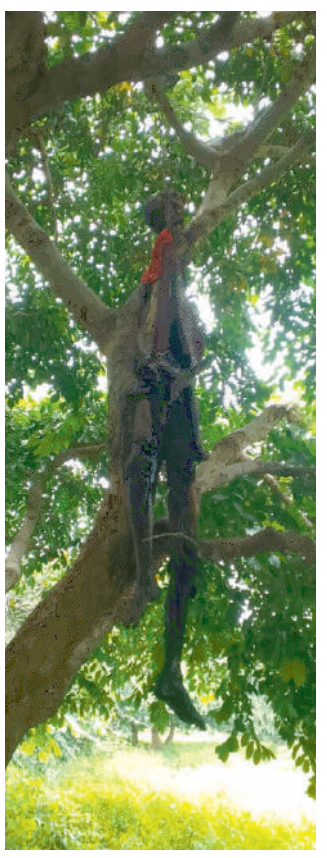

--संदिग्ध परिस्थितियों में पेड़ पर लटका मिला 14 दिन से लापता किशोर का शव, हत्या का आरोप
-- सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया, जांच शुरू
--मृतक मासूम की बहन ने पुलिस को तहरीर देकर लगाई गुहार
--पीड़िता का आरोप पुलिस नहीं कर रही कार्रवाई, अंतिम संस्कार को नहीं ले जाने दे रही शव
--पीड़िता ने वीडियो वायरल कर लगाई गुहार, गांव में भारी पुलिस बल तैनात
-- बदायूं के कादरचौक थाना क्षेत्र व कस्बे का मामला

ग्राम पंचायत ब्योर में लावारिसों की तरह फेंकी गई गौवंश फोटो वायरल मामला बिनावर थान क्षेत्र के ग्राम पंचायत ब्योर का पूरा मामला। सूत्रों की माने तो ग्राम प्रधान द्वारा फिकवाया गया गौशाला में मृत गौवंश।

हिंदी है हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा-हिंदी भाषा सभी समुदायों धर्मों संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत एक ऐसा देश है जो अपनी विविधताओं में एकता के लिए जाना जाता है।यहां सैकड़ों भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं, जिनमें से हिंदी देश की सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा है। यह दिन केवल एक भाषा के सम्मान का दिन नहीं है, बल्कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति और पहचान की आत्मा का उत्सव है। हिंदी न केवल भारत में करोड़ों लोगों की मातृभाषा है, बल्कि यह विश्व के उन प्रमुख भाषाई ध्वजों में से एक है, जिसने अपनी जड़ों को मजबूत बनाए रखा,वैश्विक स्तरपर भी विस्तार पाया है।हर साल 14 सितंबर का दिन पूरे देश में हिंदी दिवस के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि वैश्विक स्तरपर इंग्लिश मंदारिन के बाद,हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोलने वाली भाषा है।10 जनवरी 2025 को जहां विश्व में हिंदी दिवस मनाया जाता है, वही 14 सितंबर को भारत में हिंदी दिवस के रूप में भी मनाया जा रहा है, क्योंकि हिंदी को 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा में राजभाषा बनाने का फैसला किया था।वैश्विक स्तरपर हिंदी को लेकर पहला आयोजन 10 जनवरी 1974 को महाराष्ट्र के नागपुर में किया गया था, इस सम्मेलन में 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। साल 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन किया था। साल 2006 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। हिंदी हमारी एक राजभाषा है और उत्तर भारत के कई राज्यों में प्रमुख रूप से बोली जाती है। हिंदी भारत के अलावा भारत के पड़ोसी देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका में भी बोली जाती है,इसके अलावा दुनियाँ के कई देशों में यह भाषा लोकप्रिय है और मॉरीशस जैसे देशों में भी बोली जाती है। हिंदी को जन-जन की भाषा के रूप में भी जाना जाता है औए इस भाषा को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए हिंदी दिवस के अवसर पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।हर साल दो बार हिंदी दिवस मनाया जाता है।जनगणना 2011 के अनुसार, भारत की लगभग 44 पर्सेंट आबादी हिन्दी को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलती है। हिन्दी भाषा का प्रभाव सबसे ज़्यादा उत्तर भारत में देखने को मिलता है। उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली को अक्सर 'हिन्दी बेल्ट' कहा जाता है।इसी पृष्ठभूमि में 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाना न सिर्फ भाषा के गौरव को बढ़ाता है, बल्कि हमें यह भी याद दिलाता है कि अपनी मातृभाषा कोअपनाना और आगे बढ़ाना कितना ज़रूरी है।साहित्य की बात करें तो हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण दौर छायावादी युग कहलाता है, जिसके चार स्तंभ माने जाते हैं- जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा।वहीं, हिन्दी के 'राष्ट्रकवि' रामधारी सिंह दिनकर को माना जाता है।हिन्दी हमारी पहचान और संस्कृति का अहम हिस्सा है, इसलिए इस दिन लोग अलग-अलग तरीकों से अपनी मातृभाषा का सम्मान करते हैं। चूँकि हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति परंपरा व जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है, इसलिए मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से, इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,राष्ट्रीय हिंदी दिवस 14 सितंबर 2025, हिंदी भाषा सभी समुदायों धर्मो संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है।

साथियों बात अगर हम हिंदी भाषा को गहराई से जानने की करें तो, (1) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दी को जनमानस की भाषा कहा था। वह चाहते थे कि हिन्दी राष्ट्रभाषा बने। उन्होंने 1918 में आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए कहा था। आजादी मिलने के बाद लंबे विचार-विमर्श के बादआखिरकार 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा में हिन्दी को राज भाषा बनाने का फैसला लिया गया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के विचार से बहुत से लोग खुश नहीं थे। कइयों का कहना था कि सबको हिंदी ही बोलनी है तो आजादी के क्या, मायने रह जाएंगे, ऐसे में मत बंटने से हिंदी नहीं बन पाई देश की राष्ट्रभाषा। (2) इंग्लिश और मंदारिन के बाद हिंदी विश्व की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है।(3) विश्व हिंदी दिवस और हिंदी दिवस में अंतर है, भारत में हिंदी दिवस 14 सितंबर को होता है। वहीं हर साल विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी को मनाया जाता है। दोनों दिनों का मकसद हिन्दी को प्रोत्साहित करना है। विश्व हिंदी दिवस का उद्देश्य वैश्विक स्तरपर इसे बढ़ावा देना है।14 सितंबर के दिन 1949 में संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा बनाने का फैसला किया था। इस दिन की याद में राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है। जबकि विश्व हिंदी दिवस का मकसद विश्व में हिंदी को बढ़ावा देना है। 10 जनवरी, 2006 को भारत सरकार ने इसे विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाए जाने की घोषणा की थी। पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में किया गया था। अभी तक पोर्ट लुईस, स्पेन, लंदन, न्यूयॉर्क, जोहानसबर्ग आदि सहित भारत में विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। (4) दुनियाँ की सबसे प्रसिद्ध ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी (शब्दकोश) हर साल भारतीय शब्दों को जगह दे रही है।ऑक्सफोर्ड ने आत्मनिर्भरता, चड्डी, बापू, सूर्य नमस्कार, आधार, नारी शक्ति और अच्छा शब्द को भी अपने प्रतिष्ठित शब्दकोश में जगह दी है। 'अरे यार!', भेलपूरी, चूड़ीदार, ढाबा, बदमाश, चुप, फंडा, चाचा, चौधरी, चमचा, दादागीरी, जुगाड़, पायजामा, कीमा, पापड़, करी, चटनी, अवतार, चीता, गुरु, जिमखाना, मंत्र, महाराजा, मुग़ल, निर्वाण, पंडित, ठग, बरामदा जैसे शब्द भी इसमें शामिल हैं। (5) दक्षिण प्रशांत महासागर क्षेत्र में फिजी नाम का एक द्वीप देश है जहां हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया है। (6) भारत के अलावा मॉरीशस,फिलीपींस, नेपाल, फिजी, गुयाना, सुरिनाम, त्रिनिदाद, तिब्बत औरपाकिस्तान में कुछ परिवर्तनों के साथ ही सही लेकिन हिंदी बोली और समझी जाती है। (7) हिंदी में उच्चतर शोध के लिए भारत सरकार ने 1963 में केंद्रीय हिंदी संस्थान की स्थापना की। देश भर में इसके आठ केंद्र हैं। (8) अभी विश्व के सैंकड़ों विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है और पूरी दुनिया में करोड़ों लोग हिन्दी बोलते हैं। अमेरिका में लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। (9) भारत,फिजी के अलावामॉरीशस, फिलीपींस, अमेरिका, न्यूजीलैंड, यूगांडा,

सिंगापुर, नेपाल, गुयाना, सुरिनाम, त्रिनिदाद, तिब्बत, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी और पाकिस्तान में कुछ परिवर्तनों के साथ ही सही लेकिन हिंदी बोली और समझी जाती है। (10) हिंदी का नाम फारसी शब्द 'हिंद' से लिया गया है, जिसका अर्थ है सिंधु नदी की भूमि। फारसी बोलने वाले तुर्क जिन्होंने गंगा के मैदान और पंजाब पर आक्रमण किया,11वीं शताब्दी कीशुरुआत में सिंधु नदी के किनारे बोली जाने वाली भाषा को 'हिंदी' नाम दिया था। यह भाषा भारत की आधिकारिक भाषा है और संयुक्त अरब अमीरात में एक मान्यता प्राप्त अल्पसंख्यक भाषा है।

साथियों बात अगर हम हिंदी भाषा को एक भाषा नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति परंपरा वह जीवन शैली के लिए अभिन्न हिस्सा होने की करें तो, हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है। यह हमारी पहचान है, और हम सभी हिंदी बोलकर अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखते हैं। हिंदी भाषा का इतिहास बहुत पुराना है और यह हमारे साहित्य, कला, और फिल्म उद्योग का अभिन्न हिस्सा है। हिंदी फिल्मों के माध्यम से यह भाषा न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में लोकप्रिय हुई है। बॉलीवुड ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर एक पहचान दिलाई है।दुनिया भर में हिंदी बोलने वाले लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। भारत में लगभग 44 प्रतिशत लोग हिंदी बोलते हैं और यह संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। इसके अलावा, नेपाल पाकिस्तान, बांगलादेश, श्रीलंका जैसे देशों में भी हिंदी बोली जातीहै।आजकल हिंदी का प्रभाव वैश्विक स्तर पर बढ़ रहा है, और विभिन्न देशों में हिंदी सीखने वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि हो रही है। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हिंदी भाषा अब न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी लोगों के बीच संवाद का माध्यम बन गई है। हिंदी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह सभी समुदायों, धर्मों और संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है। भारत में विविधता के बावजूद हिंदी ने हमेशा एकता का प्रतीक माना है। यह भाषा हमारे राष्ट्र की एकता और अखंडता को मजबूत करती है। हिंदी में संवाद करने से हम अपनी संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों को आसानी से व्यक्त कर सकते हैं।विश्व हिंदी दिवस का उद्देश्य हिंदी को एक वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करना है। इस दिन हम यह संकल्प लेते हैं कि हम अपनी भाषा को बढ़ावा देंगे और इसे पूरे विश्व में फैलाने का कार्य करेंगे। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हिंदी को न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी सम्मान मिले।

अतः अगर हम उपलब्ध पर्यावरण का अध्ययन करें इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि, राष्ट्रीय हिंदी दिवस 14 सितंबर 2025-हिंदी है हम वतन है हिन्दोस्तां हमाराहिंदी भाषा सभी समुदायों धर्मों संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है।हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति परंपरा में जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है।प्राचीन भारत में साहित्य कला व संस्कृति में हिंदी का अभिन्न योगदान है व भारतीय समाज की आत्मा है।

त्योहारी सीजन में टोयोटा की कारों पर भारी छूट, जीएसटी कटौती का सीधा लाभ!

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने संशोधित जीएसटी दरों का पूरा लाभ ग्राहकों को देने की घोषणा की है। नई कीमतें 22 सितंबर 2025 से लागू होंगी जिससे त्योहारी सीजन में कार खरीदना और भी किफायती हो जाएगा। टोयोटा की कारों पर हजारों से लेकर लाखों रुपये तक की बचत होगी। कंपनी का कहना है कि इससे ऑटो सेक्टर में भरोसा मजबूत होगा और त्योहारी सीजन में मांग बढ़ेगी।

नई दिल्ली। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (TKM) ने घोषणा की है कि वह हाल ही में संशोधित GST दरों का पूरा लाभ ग्राहकों को देगी। नई कीमतें 22 सितंबर 2025 से लागू होंगी, ठीक त्योहारी सीजन की शुरुआत के समय। यह कदम ग्राहकों के लिए कार खरीदना और भी किफायती बना देगा। आइए विस्तार में जानते हैं कि Toyota की गाड़ियां कितनी सस्ती हुई है।

Toyota की कारों पर कितना डिस्काउंट?

मॉडल	कीमत में कमी (रुपये में)
Glanza	85,300 तक
Taisor	1,11,100 तक
Rumion	48,700 तक
Hyryder	65,400 तक
Crysta	1,80,600 तक
Hycross	1,15,800 तक
Fortuner	3,49,000 तक
Legender	3,34,000 तक
Hilux	2,52,700 तक
Camry	1,01,800 तक
Vellfire	2,78,000 तक

नई कीमतों के चलते अलग-अलग मॉडल पर हजारों से लेकर लाखों रुपये तक की बचत होगी। आइए देखें किस गाड़ी पर कितना फायदा मिलेगा।

कंपनी का बयान

Toyota के वाइस प्रेसिडेंट वरिंदर वाधवा ने कहा कि हम भारत सरकार का धन्यवाद करते हैं इस ऐतिहासिक सुधार के लिए। इस कदम से ग्राहकों के लिए गाड़ियां ज्यादा किफायती होंगी और ऑटो सेक्टर में भरोसा और मजबूत होगा। त्योहारी सीजन में हमें उम्मीद है कि यह पहल मांग को और तेज करेगी। एक पारदर्शी और ग्राहक-केन्द्रित कंपनी होने के नाते हम यह पूरा फायदा ग्राहकों तक पहुंचा रहे हैं।

त्योहारी सीजन को मिलेगी रफ्तार

यह घोषणा नवरात्रि से कुछ हफ्ते पहले आई है, जब कार खरीदने का पीक टाइम होता है। इस कदम से Toyota की एंट्री-लेवल हैचबैक Glanza से लेकर प्रीमियम SUV Fortuner, Camry और Vellfire तक सबकी बिक्री को मजबूती मिलेगी। साथ ही, सरकार के उद्देश्य खपत को बढ़ावा देने को भी सहारा मिलेगा।

इंजन, फीचर्स और कीमत में कौन है बेस्ट बाइक?

हीरो ग्लैमर एक्स बनाम होंडा सीबी125 हॉर्नेट हीरो मोटोकॉर्प ने Hero Glamour X 125 को लॉन्च किया जो क्रूज कंट्रोल वाली सबसे सस्ती बाइक है। इसका मुकाबला Honda CB125 Hornet से है। Glamour X में 124.7cc का इंजन है जबकि Hornet में 123.94 cc का इंजन है। Glamour X में क्रूज कंट्रोल राइडिंग मोड्स और डिजिटल LCD क्लस्टर जैसे फीचर्स हैं जबकि Hornet में TFT डिस्प्ले और ब्लूटूथ कनेक्टिविटी है।

नई दिल्ली। हीरो मोटोकॉर्प ने हाल ही में भारत में Hero Glamour X 125 को लॉन्च किया है। भारत में यह सबसे सस्ती क्रूज कंट्रोल वाली बाइक है। इसके साथ ही कई बेहतरीन फीचर्स से लैस किया गया है। इसका मुकाबला Honda CB125 Hornet से देखने के लिए मिलेगा, जो हाल ही में भारत में लॉन्च हुई है। यह भी कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है। हम यहां पर इन दोनों (Hero Glamour X Vs Honda CB125 Hornet) बाइक की तुलना करते हुए आपको बता रहे हैं कि इंजन, फीचर्स और कीमत के मामले में कौन बेहतर है?

Hero Glamour X Vs Honda CB125 Hornet: कीमत

Hero Glamour X को दो वेरिएंट में लॉन्च किया गया है। इसके ड्रम वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 89,999 रुपये, जबकि डिस्क वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 99,999 रुपये है। वहीं, Honda CB125 Hornet को 1.12 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है।

Hero Glamour X Vs Honda CB125 Hornet: इंजन

Hero Glamour X में 124.7 cc का एयर-कूल्ड सिंगल-सिलेंडर Sprint EBT इंजन दिया गया है, जो 11.3 hp की पावर और 10.5 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसमें 5-स्पीड गियरबॉक्स दिया गया है।

Honda CB125 Hornet में 123.94 cc का 4-स्ट्रोक, SI इंजन दिया गया है, जो 11hp की पावर और 11.2 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 5-स्पीड ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा गया है।

Hero Glamour X Vs Honda CB125 Hornet: फीचर्स

Hero Glamour X अपने सेगमेंट की सबसे एडवांस बाइक में से एक है। यह क्रूज कंट्रोल पाने वाली पहली 125cc बाइक है। इसके अलावा, राइड-बाय-वायर और तीन राइडिंग मोड्स ईको, रोड और पावर दिया गया है। इसके साथ ही रियर पैनिक ब्रेक अलर्ट भी दिया गया है। इसके साथ ही फुल LED लाइटिंग, USB Type-C चार्जिंग पोर्ट, और फुली डिजिटल LCD क्लस्टर के साथ 60+ फंक्शन्स जैसे टैर्न-बाय-टर्न नेविगेशन, कॉल/एसएमएस अलर्ट्स, गियर इंडिकेटर, फ्यूल एफिशिएंसी डेटा, रेंज टू एम्प्टी, ब्राइटनेस एडजस्टमेंट और ब्लूटूथ कनेक्टिविटी जैसे फीचर्स भी दिए गए हैं।

Honda CB125 Hornet में ब्लूटूथ कनेक्टिविटी के साथ 4.2-इंच का TFT डिस्प्ले दिया गया है। यह होंडा रोडसिंक ऐप को भी सपोर्ट करता है, जिससे नेविगेशन, कॉल, SMS अलर्ट और म्यूजिक प्लेबैक की सुविधा मिलती है। इसमें एक USB टाइप-सी चार्जिंग पोर्ट, इंजन स्टॉप स्विच और इंजन इन्हिबिटर के साथ एक साइड-स्टैंड इंडिकेटर भी दिया गया है।

टीवीएस अपाचे ने मनाई 20वीं सालगिरह, लॉन्च किए खास एडिशन और नए वेरिएंट्स

टीवीएस मोटर कंपनी ने Apache ब्रांड की 20वीं सालगिरह पर लिमिटेड-एडिशन मॉडल और टॉप-एंड वेरिएंट्स पेश किए हैं। Apache RTR और RR लाइनअप में नए फीचर्स और अपडेट्स शामिल हैं। स्पेशल एडिशन में ब्लैक-एंड-शैम्पेन-गोल्ड लिवरी और डुअल-टोन अलॉय व्हील्स हैं। RTR 160 4V और RTR 200 4V को नए टॉप-एंड ट्रिम्स में एडवांस फीचर्स मिले हैं।

नई दिल्ली। TVS मोटर कंपनी ने अपने फ्लैगशिप ब्रांड Apache की 20वीं सालगिरह मनाने के लिए खास लिमिटेड-एडिशन मॉडल्स और नए टॉप-एंड वेरिएंट्स लॉन्च किए हैं। इस मौके पर अपाचे RTR और RR लाइनअप में कई नए फीचर्स और अपडेट्स जोड़े गए हैं।

TVS Apache 20th Anniversary Limited Edition

स्पेशल 20th Anniversary Editions में शामिल हैं, जो RTR 160, RTR 180, RTR 200 4V, Apache RTR 310 और RR 310 है। इनमें ब्लैक-एंड-शैम्पेन-गोल्ड लिवरी, डुअल-टोन अलॉय व्हील्स, USB चार्जिंग पोर्ट और खास 20th Anniversary लोगो दिया गया है। कीमतें RTR 160 से शुरू होकर 1,37,990 (एक्स-शोरूम, दिल्ली) से शुरू होती हैं। टॉप मॉडल RR 310 की कीमत 3,37,000 रखी गई है।

नए टॉप-एंड RTR वेरिएंट्स

RTR 160 4V और RTR 200 4V को नए टॉप-एंड ट्रिम्स मिले हैं, जिनमें एडवांस फीचर्स जोड़े गए हैं। इसमें नया क्लास-डी प्रोजेक्टर हेडलैंप और LED DRLs, 5-इंच TFT इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर (Bluetooth और Voice Assist के साथ), ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम, असिस्ट, और स्लिपर क्लच दिया गया है। इसे नए कलर ऑप्शन रेसिंग रेड, मरीन ब्लू, मैट ब्लैक (160 4V) और मैट ब्लैक, ग्रेनाइट ग्रे (200 4V) भी दिए गए हैं।

TVS Apache स्पेशल 20th एनिवर्सरी एडिशन की कीमतें

मॉडल वेरिएंट	कीमत (एक्स-शोरूम नई दिल्ली)
TVS Apache RTR 160 4V Black edition	1,28,490
Disc BT Special edition	1,34,970
USD + LCD Variant	1,39,990
New Top-End TFT + Projector Headlamp Variant	1,47,990
TVS Apache RTR 200 4V USD + LCD Variant	1,53,990
New Top-End TFT + Projector Headlamp Variant	1,59,990
TVS Apache 20th Anniversary Limited Edition	
लिमिटेड एडिशन एनिवर्सरी रेंज की मत (एक्स-शोरूम दिल्ली)	
TVS Apache RTR 160	1,37,990
TVS Apache RTR 180	1,39,990
TVS Apache RTR 160 4V	1,50,990
TVS Apache RTR 200 4V	1,62,990
TVS Apache RTR 310	3,11,000
TVS Apache RR310	3,37,000

TVS Apache की 20 साल की विरासत

TVS Apache ने 2005 से अब तक 80 देशों में 65 लाख से ज्यादा यूनिट्स बेची हैं। Apache ब्रांड अपने "Track to Road" फिलॉसफी के लिए जाना जाता है, जिसमें रेसिंग टेक्नोलॉजी को प्रोडक्शन बाइक में लाया जाता है। टीवीएस मोटर कंपनी के सीईओ के. एन. राधाकृष्णन ने कहा कि अपाचे की यह 20 साल की यात्रा हमारे 6.5 मिलियन राइडर्स और पूरी टीवीएस टीम को समर्पित है। आगे भी हम नए सेगमेंट और मार्केट्स में कदम रखकर अपाचे की विरासत को आगे बढ़ाएंगे।

एथर एनर्जी ने पेश किया अगली पीढ़ी का ईएल प्लेटफॉर्म और एथरस्टैक 7.0 सॉफ्टवेयर

एथर एनर्जी ने एथर कम्युनिटी डे 2025 में अगली पीढ़ी का ईएल प्लेटफॉर्म एथरस्टैक™ 7.0 सॉफ्टवेयर नेक्स्ट-जेन फास्ट चार्जर्स और इंफिनिट क्रूज कंट्रोल सिस्टम लॉन्च किया। रिज़्टा स्कूटर में भी अपडेट्स पेश किए गए। नया ईएल प्लेटफॉर्म वर्सेटिलिटी और स्केलेबिलिटी के लिए डिज़ाइन किया गया है। एथर ने कॉन्सेप्ट रिडक्स भी दिखाया। एथरस्टैक 7.0 वॉयस इंटरैक्शन को सपोर्ट करता है। रिज़्टा Z को टचस्क्रीन और नया कलर अपडेट मिला है।

नई दिल्ली: भारत की इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर कंपनी Ather Energy ने कई बड़े इनोवेशन की घोषणा की है। इसकी घोषणा कंपनी ने Ather Community Day 2025 पर की है। इस इवेंट में कंपनी ने अपनी अगली पीढ़ी का EL प्लेटफॉर्म, नया AtherStack™ 7.0 सॉफ्टवेयर, नेक्स्ट-जेन फास्ट चार्जर्स और Infinite Cruise क्रूज़ कंट्रोल सिस्टम लॉन्च किया। साथ ही, Rizta स्कूटर में भी बड़े अपडेट्स पेश किए गए। ये सभी अपडेट्स Ather के अगले ग्रोथ फेज़ की शुरुआत को दर्शाते हैं और भारतीय इलेक्ट्रिक व्हीकल इंडस्ट्री में नए मानक स्थापित करने जा रहे हैं। आइए विस्तार में इनके बारे में जानते हैं।

Ather का नया EL प्लेटफॉर्म

Ather ने अपनी पहली जनरेशन के 450 प्लेटफॉर्म के बाद पहली बार नया EL प्लेटफॉर्म पेश किया है। इसे वर्सेटिलिटी, स्केलेबिलिटी और कॉस्ट ऑप्टिमाइजेशन के लिए डिजाइन किया गया है। यह प्लेटफॉर्म एक ही बेस पर अलग-अलग सेगमेंट के स्कूटर्स बनाने की सुविधा देता है। 26 लाख किलोमीटर के फील्ड डेटा के आधार पर तैयार किया गया है। इसमें नया चेसिस, पावरट्रेन और इलेक्ट्रॉनिक्स स्टैक तक दिया गया है। साथ ही 15% तेज असेंबली और 2X तेज सर्विसिंग, सर्विस इंटरवल अब 10,000 किमी तक दी जा रही है।

कॉन्सेप्ट Ather Redux दिखाया

Ather ने अपने इस नए प्लेटफॉर्म के जरिए कई चीजों में बदलाव किया है। इसके तहत बेहतर ब्रेकिंग परफॉर्मेंस और कम स्टॉपिंग डिस्टेंस के लिए AEBS दी गई है। इसमें ऑनबोर्ड चार्जर और मोटर कंट्रोलर का इंटीग्रेशन, अब अलग पोर्टेबल चार्जर की ज़रूरत नहीं दी है। परफॉर्मेंस बेहतर करने के लिए Redux दिया गया है। Ather ने एक कॉन्सेप्ट Redux भी दिखाया, जो स्कूटर और मोटरसाइकिल के डायनेमिक्स का अनोखा कॉम्बिनेशन है।

इसमें अल्ट्रा-लाइट एल्युमिनियम फ्रेम, 3D प्रिंटेड सीट, AmplyTex बॉडी पैनल, पोश्चर-आधारित मोड चेंज – स्कूटर से स्पोर्ट बाइक में ट्रांसफॉर्मेशन, राइडिंग कॉन्टेक्स्ट के अनुसार इंटरफ़ेस बदलने के लिए Morph-UI और अल्ट्रा-फास्ट एक्सीलरेशन के लिए नया थ्रिलिंग फीचर Take off, वॉयस असिस्टेंट के साथ स्मार्ट राइडिंग दी गई है। Ather ने AtherStack™ 7.0 पेश किया, जो अब वॉयस इंटरैक्शन को सपोर्ट करता है। इसके जरिए नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग के साथ सहज बातचीत, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग के साथ सहज बातचीत, रियल-टाइम अलर्ट्स, लोकेशन शेयरिंग, टायर प्रेशर अपडेट, पोथोल अलर्ट, क्रैश अलर्ट, पार्कसेफ और लॉकसेफ, OTA अपडे, एडवांस्ड क्रूज़ कंट्रोल दिया गया है। इसमें लो-स्पीड से 90 किमी/घंटा तक बिना ब्रेक डिसएंगेज के लिए सिटीक्रूज, चढ़ाई और ढलान पर स्मूद टॉर्क और रीजेनेरेटिव ब्रेकिंग के लिए हिल कंट्रोल और क्रॉवल कंट्रोल भी दिया गया है।

इस माह लॉन्च होने को तैयार एक से बढ़कर एक कारें, मारुति से लेकर विनफास्ट तक लिस्ट में

भारत में कई वाहन निर्माताओं की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। बिक्री बढ़ाने के लिए अधिकतर निर्माता अपनी कारों को अपडेट करते हैं और कुछ नई कारों को पेश और लॉन्च किया जाता है। इस महीने में भी कई कारों को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। ऐसी कौन सी कारें हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में वाहन निर्माताओं की ओर से समय समय पर अपनी कारों को अपडेट किया जाता है। इसके साथ ही कई नई कारों को पेश और लॉन्च भी किया जाता है। सितंबर महीने में भी कई कारों को भारत में लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। किस निर्माता की ओर से किस गाड़ी को लॉन्च किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Escudo होगी लॉन्च

देश की प्रमुख वाहन निर्माता मारुति सुजुकी की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से सितंबर महीने में नई एसयूवी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से तीन सितंबर को Maruti Escudo नाम से नई एसयूवी को लॉन्च किया जाएगा। यह एसयूवी मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाएगी। इसे मारुति की ओर से एरिना डीलरशिप से ऑफर किया जाएगा।

Citroen Basalt X होगी लॉन्च

सिट्रॉएन की ओर से भी भारत में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट के वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से कूप एसयूवी के तौर पर ऑफर की जाने वाली बेसाल्ट के नए वर्जन एक्स को पांच सितंबर को लॉन्च किया जाएगा।

Vinfast करेगी दो एसयूवी लॉन्च

इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता विनफास्ट की ओर से भी छह सितंबर को दो नई एसयूवी को इलेक्ट्रिक सेगमेंट में लॉन्च किया जाएगा। जानकारी के मुताबिक निर्माता Vinfast VF6 और VF7 को लॉन्च करेगी। इन दोनों ही एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाएगा।

Mahindra Thar Facelift

महिंद्रा की ओर से ऑफर की जाने वाली तीन दरवाजों वाली थार के फेसलिफ्ट को भी सितंबर महीने में लॉन्च किया जाएगा। हालांकि अभी इस एसयूवी के लॉन्च की तारीख तय नहीं हुई है। इसके फेसलिफ्ट में थार रॉक्स की तरह डिजाइन और फीचर्स को अपडेट किया जाएगा।

Volvo EX30 होगी लॉन्च

वॉल्वो की ओर से भी कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से सितंबर महीने में सबसे सस्ती इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर Volvo EX30 को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। लेनिक अभी इसके लॉन्च की तारीख तय नहीं हुई है।

डुकाटी डेजर्टएक्स रैली पर ₹1.5 लाख तक का डिस्काउंट

डुकाटी इंडिया अपनी DesertX Rally पर 1.5 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है। यह ऑफर 31 अगस्त 2025 तक के लिए है। DesertX Rally की एक्स-शोरूम कीमत 23.71 लाख रुपये है। इस मोटरसाइकिल में 937cc का डुकाटी टेस्टास्ट्रेटा इंजन है जो 108 bhp की पावर और 92 Nm का टॉर्क देता है। इसमें छह राइडिंग मोड्स भी हैं।

नई दिल्ली। डुकाटी इंडिया अपनी DesertX Rally पर 1.5 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है। इसे खरीदने वालों को 1.5 लाख रुपये का स्टोर क्रेडिट मिलेगा, जिससे वे स्टोर से ही एक्सेसरीज, राइडिंग जैकेट या अन्य सामान खरीद पाएंगे। डुकाटी की इस मोटरसाइकिल यह डिस्काउंट ऑफर केवल 31 अगस्त 2025 तक के लिए दिया जा रहा है।

Ducati DesertX Rally की कीमत

Ducati DesertX Rally की एक्स-शोरूम कीमत 23.71 लाख रुपये है। इसका मतलब है कि यह डुकाटी डेजर्टएक्स का सबसे महंगा मॉडल है।

डिजाइन और स्टाइलिंग

Ducati DesertX Rally में सामने की तरफ 21-इंच और पीछे 18-इंच का मजबूत व्हील दिया गया है। यह डुकाटी लाइनअप में पहली मोटरसाइकिल है जिसमें ऑफ-रोड के लिए ऐसी खास कॉम्बिनेशन दिया जाता है। इसके परफॉर्मेंस को बढ़ाने के लिए, बाइक को एक नई livery दी गई है। डुकाटी ने इसमें स्टैंडर्ड रूप से पिरिली स्कॉर्पियन रैली एसटीआर टायर दिए गए हैं, राइडर्स सड़क पर बेहतर उपयोग के लिए स्कॉर्पियन ट्रेल II टायर भी चुन सकते हैं।

सस्पेंशन और चेसिस

Ducati DesertX Rally के में बीक-स्टाइल फ्रंट मडगार्ड और कायबा सस्पेंशन दिया गया है। फ्रंट और रियर दोनों सस्पेंशन में एक्स्ट्रा 20 मिमी की यात्रा दी गई है, जिससे ऑफ-रोड हैंडलिंग और आराम बेहतर होता है। नए विकसित सेंट्रल-स्पोक्ड व्हील्स भी पारंपरिक अलॉय रिम्स की तुलना में प्रभाव प्रतिरोध को बेहतर बनाते हैं, जिससे यह ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर अधिक लचीला बनती है।

इंजन और परफॉर्मेंस

Ducati DesertX Rally में 937cc का डुकाटी टेस्टास्ट्रेटा 11° ट्विन-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है। यह इंजन 108 bhp की पावर और 92 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन हाईवे पर क्रूजिंग और मुश्किल ऑफ-रोड रास्तों दोनों के लिए आवश्यक पावर और लचीलापन सुनिश्चित करता है।

Ducati DesertX Rally के फीचर्स

इसमें छह राइडिंग मोड्स स्पोर्ट, टूरिंग, अर्बन, वेट, एंड्यूरो और रैली दी जाती है। इससे राइडर अपनी जरूरत के हिसाब से परफॉर्मेंस को बेहतर बना सकता है। इसमें कॉर्नरिंग एबीएस, डुकाटी ट्रैक्शन कंट्रोल (DTC), और डुकाटी व्हीली कंट्रोल (DWC) जैसे एडवांस्ड राइडर एड्स भी शामिल हैं। डुकाटी मल्टीमीडिया सिस्टम के साथ 5-इंच का कलर टीएफटी डिस्प्ले स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, म्यूजिक प्लेबैक, कॉल मैनेजमेंट और वैकल्पिक टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन जैसे फीचर्स के साथ आती है।

क्या एक संयुक्त एमबीबीएस-आयुर्वेद डिग्री सक्षम डॉक्टरों का उत्पादन कर सकती है? विजय गर्ग

विजय गर्ग

एक संयुक्त एमबीबीएस-आयुर्वेद डिग्री संभावित रूप से सक्षम डॉक्टरों का उत्पादन कर सकती है, लेकिन अवधारणा अत्यधिक विवादास्पद है और महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करती है। वर्तमान में भारत में दोनों डिग्री की पेशकश करने वाला कोई एकीकृत पाठ्यक्रम नहीं है, हालांकि एक प्रस्तावित किया गया है। यह बहस केंद्र है कि क्या एक एकल, एकीकृत कार्यक्रम मौलिक रूप से विभिन्न दर्शन, कार्यप्रणाली और नियामक ढांचे के साथ दो अलग-अलग चिकित्सा प्रणालियों में एक चिकित्सक को पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित कर सकता है। प्रस्तावित संयुक्त डिग्री हालांकि ऐसा कोई कार्यक्रम मौजूद नहीं है, जवाहरलाल इंस्टीट्यूट ऑफ पोस्टग्रेजुएट मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च ( ) ने एक एकीकृत एमबीबीएस- बीएमएस (बैचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी) कार्यक्रम का प्रस्ताव दिया है। लक्ष्य उन डॉक्टरों को बनाना है जो आयुर्वेद के समग्र ज्ञान के साथ आधुनिक चिकित्सा के वैज्ञानिक कठोरता को मिश्रण कर सकते हैं। इसे चिकित्सा बहुलवाद को बढ़ावा देने के एक तरीके के रूप में देखा जाता है और संभावित रूप से एकीकृत स्वास्थ्य सेवा की बढ़ती आवश्यकता को संबोधित करता है। प्रस्तावित पाठ्यक्रम एक डिग्री से अधिक लंबा होने की उम्मीद है, पांच साल से अधिक की संभावना है और एक साल की इंटर्नशिप। एकीकरण के संभावित लाभ आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद को एकीकृत करने से कई फायदे हो सकते हैं:

समग्र रोगी देखभाल: एक संयुक्त दृष्टिकोण अधिक व्यापक रोगी देखभाल का कारण बन सकता है, दोनों रोगों के इलाज पर ध्यान केंद्रित करने और जीवन शैली में परिवर्तन और निवारक उपायों के माध्यम से समग्र कल्याण को बढ़ावा देने के साथ, जो आयुर्वेद के मुख्य सिद्धांत हैं।

पुरानी बीमारी को संबोधित करते हुए: जीवन शैली के हस्तक्षेप और प्राकृतिक पदार्थों पर आयुर्वेद का जोर पुरानी, गैर-संचारी रोगों के प्रबंधन के लिए कम लागत वाले, दीर्घकालिक विकल्प, एक बढ़ती वैश्विक स्वास्थ्य चिंता की पेशकश कर सकता है।

व्यापक उपचार विकल्प: दोहरी डिग्री वाले चिकित्सक के पास अपने निपटान में नैदानिक और चिकित्सीय उपकरणों की एक विस्तृत श्रृंखला होगी, जिससे संभावित रूप से कुछ रोगियों के लिए बेहतर परिणाम होंगे। चुनौतियां और आलोचनाएं संयुक्त डिग्री की अवधारणा को चिकित्सा समुदाय में कई लोगों के मजबूत विरोध के साथ पूरा किया जाता है, जो रोगी सुरक्षा और पाठ्यक्रम की वैज्ञानिक वैधता के बारे में चिंता बढ़ाते हैं।

मौलिक रूप से अलग सिस्टम: आधुनिक चिकित्सा साक्ष्य-आधारित अभ्यास पर आधारित है, जिसमें नैदानिक परीक्षणों की कठोर प्रक्रिया, डबल-ब्लाइंड अध्ययन और दवाओं और उपचारों के लिए नियामक अनुमोदन है। दूसरी ओर, आयुर्वेद प्राचीन ग्रंथों और दोषों (शरीर के हास्य) और प्रकृति (संविधान) जैसी अवधारणाओं पर आधारित चिकित्सा की एक पारंपरिक प्रणाली है, जो वैज्ञानिक रूप से सत्यापन योग्य नहीं हैं। आलोचकों का तर्क है कि ये दोनों प्रणालियां असंगत हैं।

₹मिक्सोपैथी₹ चिंताएं: इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) ने इस विचार पर कड़ी आपत्ति जताई है, जिसमें इसे ₹मिक्सोपैथी₹ करार दिया गया है। उनका तर्क है कि एक पारंपरिक के साथ वैज्ञानिक रूप से मान्य प्रणाली को मिलाने से चिकित्सकों को भ्रमित किया जा सकता है, रोगी सुरक्षा से समझौता किया जा सकता है, और चिकित्सा शिक्षा की गुणवत्ता को पतला किया जा सकता है।

नियामक बाधाएं: आधुनिक चिकित्सा के लिए नियामक निकाय (राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग - एनएमसी) और भारतीय चिकित्सा प्रणाली (राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग - एनसीआईएसएम) अलग-अलग कानूनों के तहत काम करते हैं। वर्तमान में संयुक्त डिग्री के लिए कोई कानूनी प्रावधान नहीं है। इसके अतिरिक्त, कई आयुर्वेदिक उपचारों और योगों के लिए मानकीकृत गुणवत्ता नियंत्रण की कमी के बारे में चिंताएं हैं। यदि दो बहुत अलग-अलग चिकित्सा दर्शन एक ही समय सीमा में संयुक्त होते हैं, तो शैक्षणिक मानकों और रोगी सुरक्षा को खतरे में डाला जा सकता है, क्योंकि भारतीय चिकित्सा संघ जैसे पेशेवर संगठन पहले ही चेतावनी दे चुके हैं। ₹ अंत:विषय जोखिम फायदेमंद है, लेकिन मेरी राय में, नियामक सहायता और स्पष्ट कैरियर परिणामों के साथ, किसी भी नए पाठ्यक्रम को खुले तौर पर स्थापित करने की आवश्यकता है। अंतरिम में, उम्मीदवारों को देखभाल का अभ्यास करना चाहिए और यह मानने से बचना चाहिए कि यह दोहरी डिग्री अधिक पारंपरिक स्टैंडअलोन क्रेडेंशियल्स के रूप में मान्यता प्राप्त होगी, ₹

अतिभारित पाठ्यक्रम: दोहरी डिग्री के लिए अध्ययन की एक विशाल मात्रा की आवश्यकता होगी, इस बारे में सवाल उठाते हुए कि क्या छात्र वास्तव में अध्ययन के असाधारण लंबे और गहन पाठ्यक्रम के बिना दोनों क्षेत्रों में योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। एक छात्र को न केवल शरीर रचना विज्ञान और फार्माकोलॉजी जैसे जटिल चिकित्सा विज्ञान में महारत हासिल करनी होगी, बल्कि पारंपरिक आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी कई संस्कृत में हैं।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य पूर्व पीईएस-1 शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् सड़क कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

नाइट्रोजन-फिक्सिंग बैक्टीरिया : ये रोगाणु, जैसे कि राइजोबियम (फलियों के साथ सहजीवी संबंध में) और एज़ोटोबैक्टर (मुक्त-जीवित), निष्क्रिय वायुमंडलीय नाइट्रोजन (N_2) को अमोनिया (NH_3) जैसे प्रयोग करने योग्य रूपों में परिवर्तित करते हैं, सिंथेटिक नाइट्रोजन उर्वरकों की आवश्यकता को कम करते हैं। फास्फोरस-घुलनशील बैक्टीरिया और कवक : ये सूक्ष्मजीव, जिनमें बेसिलस और स्यूडोमोनास की कुछ प्रजातियां शामिल हैं, मिट्टी में अघुलनशील फॉस्फेट को भंग करते हैं, जिससे यह पौधों के लिए सुलभ हो जाता है।

मॉर्निंग रिवीजन छात्रों के लिए एक अत्यधिक प्रभावी अध्ययन रणनीति हो सकती है

विजय गर्ग

मॉर्निंग रिवीजन छात्रों के लिए एक अत्यधिक प्रभावी अध्ययन रणनीति हो सकती है, और इसके कई कारण हैं, जो अक्सर वैज्ञानिक निष्कर्षों द्वारा समर्थित होते हैं। हालांकि, व्यक्तिगत मतभेदों पर विचार करना भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि जो एक व्यक्ति के लिए सबसे अच्छा काम करता है वह दूसरे के लिए काम नहीं कर सकता है। यहां बताया गया है कि सुबह के संशोधन को अक्सर फायदेमंद क्यों माना जाता है: 1. । एक ताजा और आराम से दिमाग: पूरी रात की नींद के बाद, आपके मस्तिष्क के पास यादों को आराम करने और मजबूत करने का समय है। इसका मतलब है कि आप ₹पूरी तरह से चार्ज की गई बैटरी₹ के साथ जागते हैं, जो नई जानकारी को अधिक कुशलता से अवशोषित और संसाधित करने के लिए तैयार है। नींद मानसिक थकान को दूर करने में मदद करती है, जो बेहतर ध्यान और एकाग्रता की अनुमति देती है। 2. । बेहतर मेमोरी और संज्ञानात्मक कार्य: अध्ययन से संकेत मिलता है कि अल्पकालिक स्मृति और विशिष्ट तथ्यों, नामों और तिथियों को याद करने की क्षमता अक्सर सुबह में मजबूत होती है। यह आंशिक रूप से कोर्टिसोल के प्राकृतिक शिखर, ₹तनाव हार्मोन₹ के कारण होता है, जो सुबह सबसे अधिक होता है और सतर्कता और जागने को बढ़ावा देने में मदद करता है। 3 । कम व्याकुलता: सुबह के घंटे आम तौर पर शांत होते हैं, जिसमें सोशल मीडिया, फोन कॉल या घरेलू शोर से कम रुकावट होती है। यह अशांत वातावरण गहरी एकाग्रता और अधिक उत्पादक अध्ययन सत्रों के लिए अनुमति देता है। 4 । बेहतर समस्या-समाधान क्षमता: सुबह में आपके मस्तिष्क की ताज़ा स्थिति जटिल कार्यों से निपटना आसान बना सकती है, जैसे कि समीकरणों को हल करना, निबंध लिखना, या मॉक टेस्ट का अभ्यास करना, क्योंकि आपके तार्किक और विश्लेषणात्मक केंद्र इन गतिविधियों के लिए अधिक प्राइमेड हैं। 5. । एक उत्पादक दिनचर्या स्थापित करता है: लगातार सुबह में अध्ययन करने से एक मजबूत दिनचर्या बनाने में मदद मिल सकती है। यह न केवल अनुशासन को मजबूत करता है, बल्कि आपके दिमाग को एक ही समय में ₹अध्ययन मोड₹ में रहने की स्थिति भी देता है, जिससे समग्र शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार हो सकता है। विचार और विकल्प: जबकि सुबह के संशोधन के कई फायदे हैं, यह एक आकार-फिट-सभी समाधान नहीं है। व्यक्तिगत क्रोनोटाइप: सभी छात्र ₹सुबह के लोग₹ नहीं हैं। कुछ व्यक्तियों, जिन्हें ₹रात उल्लू₹ के रूप में जाना जाता है, में एक अलग जैविक लय हो सकती है और यह पता लगा सकते हैं कि वे दोपहर या शाम को अधिक सतर्क और उत्पादक हैं। मेमोरी कंसॉलिडेशन: जबकि नई जानकारी प्राप्त करने के लिए सुबह बहुत अच्छी होती है, रात में पढ़ाई भी फायदेमंद हो सकती है क्योंकि मस्तिष्क नींद के दौरान यादों को मजबूत करता है। इसका मतलब यह है कि बिस्तर से ठीक पहले सीखी गई जानकारी को बेहतर बनाए रखा जा सकता है।

कार्य-विशिष्ट सीखना: कुछ शोध बताते हैं कि विभिन्न संज्ञानात्मक कार्य दिन के विभिन्न समय के लिए बेहतर अनुकूल होते हैं। उदाहरण के लिए, रॉट मेमोराइजेशन की आवश्यकता वाले कार्यों के लिए सुबह आदर्श हो सकती है, जबकि दोपहर उन गतिविधियों के लिए बेहतर हो सकती है जिन्हें मौजूदा ज्ञान के साथ नई जानकारी को एकीकृत करने और कनेक्शन बनाने की आवश्यकता होती है। अंतत:, अध्ययन करने का सबसे अच्छा समय तब होता है जब आप सबसे अधिक केंद्रित, सतर्क और उत्पादक महसूस करते हैं। हालांकि, वैज्ञानिक साक्ष्य सुबह के संशोधन के कई लाभों की ओर इशारा करते हैं, जिससे यह कई छात्रों के लिए एक मूल्यवान रणनीति बन जाती है।

है हिंदी यूं हीन ।।

बोल-तोल बदले सभी, बदली सबकी चाल ।
परभाषा से देश का, हाल हुआ बेहाल ।।

जल में रहकर ज्यों सदा, प्यासी रहती मीन ।
होकर भाषा राज की, है हिंदी यूं हीन ।।

अपनी भाषा साधना, गूढ ज्ञान का सार ।
खुद की भाषा से बने, निराकार, साकार ।।

हो जाते हैं हल सभी, यक्ष प्रश्न तब मीत ।
निज भाषा से जब जुड़े, जागे अन्तस प्रीत ।।

अपनी भाषा से करें, अपने यूं आघात ।

हिंदी के उत्थान की, इंग्लिश में हो बात ।।

हिंदी माँ का रूप है, ममता की पहचान ।
हिंदी ने पैदा किये, तुलसी ओर रसखान ।।

मन से चाहे हम अगर, भारत का उत्थान ।
परभाषा को त्यागकर, बांटे हिंदी ज्ञान ।।

भाषा के बिन देश का, होता कब उत्थान ।
बात पते की जो कही, समझे वही सुजान ।।

जिनकी भाषा है नहीं, उनका रुके विकास ।
परभाषा से होत है, हाथों-हाथ विनाश ।।

डॉ० सत्यवान सौरभ

"हिंदी मेरे उर बसे"

आन-बान सब शान है, और हमारा गर्व।
हिंदी से ही पर्व है, हिंदी सौरभ सर्व।।

हिंदी हृदय गान है, मृदु गुणों की खान।
आखर-आखर प्रेम है, शब्द- शब्द है ज्ञान।।

बिंदिया भारत भाल की, हिंदी एक पहचान।
सैर कराती विश्व की, बने किताबी यान।।

प्रीत प्रेम की भूमि है, हिंदी निज अभिमान।
मिला कहाँ किसको कहीं, बिन भाषा सम्मान।।

वन्दन, अभिनन्दन करे, ऐसा हो गुणगान।
ग्रंथन हिंदी का कर लो, तभी मिले सम्मान।।

हिंदी भाषा रस भरी, रखती अलग पहचान।
हिंदी वेद पुराण है, हिंदी हिन्दुस्तान।।

हिंदी की मैं दास हूँ, करूँ मैं इसकी बात।
हिंदी मेरे उर बसे, हिंदी हो जज्बात ।।

निज भाषा का धनी जो, वही सही धनवान।
अपनी भाषा सीख कर, बनता व्यक्ति महान।।

मौसम बदले रंग ज़ब, तब बदले परिवेश।
हो हिंदीमय स्वयं जब, तभी बदलता देश।।

निज भाषा बिन ज्ञान का, होता कब उत्थान।
अपनी भाषा में रचे, सौरभ छंद सुजान।।

एक दिवस में क्यों बंधे, हिन्दी का अभियान।
रचे बसे हर पल रहे, हिन्दी हिन्दुस्तान।।

- डॉ प्रियंका सौरभ

एकल-उपयोग प्लास्टिक की पानी की बोतलों से पुराने जोखिम खतरनाक रूप से हैं

विजय गर्ग

एकल-उपयोग प्लास्टिक की पानी की बोतलों से जुड़े पुराने स्वास्थ्य जोखिमों को वास्तव में खतरनाक रूप से समझा जाता है, एक निष्कर्ष जो हाल ही में 140 से अधिक वैज्ञानिक लेखों की समीक्षा द्वारा समर्थित है। जबकि इन बोतलों से तीव्र विषाक्तता प्राथमिक चिंता का विषय नहीं है, नियमित उपभोग के दीर्घकालिक, पुराने प्रभाव सबसे अधिक अलार्म बढ़ाते हैं। यहाँ प्रमुख मुद्दों का टूटना है: 1. । माइक्रोप्लास्टिक्स और नैनोप्लास्टिक अंतर्ग्रहण:

उच्च खपत: जो व्यक्ति नियमित रूप से बोतलबंद पानी से पीते हैं, वे नल का पानी पीने वालों की तुलना में सालाना अनुमानित 90,000 अधिक माइक्रोप्लास्टिक कणों का सेवन करते हैं।

अदृश्य खतरा: ये छोटे कण, जो अक्सर नग्न आंखों के लिए अदृश्य होते हैं, विनिर्माण, परिवहन, भंडारण और यहां तक कि सरल हैंडलिंग के दौरान बोतलों से बहाए जाते हैं। सूर्य के प्रकाश और तापमान में उतार-चढ़ाव के संपर्क में आने जैसे कारक इस प्रक्रिया को तेज कर सकते हैं।

प्रणालीगत प्रवेश: एक बार प्रवेश करने के बाद, ये कण जैविक बाधाओं को पार कर सकते हैं, रक्तप्रवाह में प्रवेश कर सकते हैं, और महत्वपूर्ण अंगों तक पहुंच सकते हैं। वे मस्तिष्क, हृदय, यकृत, गुर्दे, फेफड़े और यहां तक कि अपरा ऊतक में भी पाए गए हैं। 2. । हानिकारक रसायनों की लीचिंग:

अंत:स्रावी विघटन: एकल-उपयोग वाली प्लास्टिक की बोतलें बिस्फेनोल ए (बीपीए) और इसके सामान्य प्रतिस्थापन, बिस्फेनॉल एस (बीपीएस) जैसे रसायनों को लीक कर सकती हैं, जिन्हें एंडोक्राइन विघटनकारी कहा जाता है।

हार्मोनल विघटन: ये रसायन शरीर के हार्मोन की नकल या हस्तक्षेप कर सकते हैं, जिससे स्वास्थ्य के मुद्दों का तरंग प्रभाव पड़ता है। अध्ययन लिंक का सुझाव देते हैं:

हार्मोनल असंतुलन

बिगड़ा प्रजनन और प्रजनन संबंधी समस्याएं

बच्चों में विकासात्मक समस्याएं

कुछ कैंसर का खतरा बढ़ जाता है (जैसे, डिम्बग्रंथि, स्तन, प्रोस्टेट)

मोटापा, टाइप 2 मधुमेह, और हृदय रोग 3। व्यापक अनुसंधान की कमी:

सीमित मानव परीक्षण: जबकि पशु और प्रयोगशाला अध्ययनों ने साक्ष्य के संबंध में प्रदान किया है, बड़े पैमाने पर, दीर्घकालिक नैदानिक मानव परीक्षणों की कमी है।

माप चुनौतियां: शोधकर्ताओं को मानव शरीर में सूक्ष्म और नैनोप्लास्टिक को मापने और पता लगाने के लिए मानकीकृत तरीकों में एक महत्वपूर्ण बाधा का सामना करना पड़ता है, जिससे समस्या की पूरी सीमा का आकलन करना मुश्किल हो जाता है।

जीर्ण बनाम तीव्र: ध्यान ऐतिहासिक रूप से तीव्र विषाक्तता पर रहा है, लेकिन सच्चा खतरा इन कणों और रसायनों के निरंतर संपर्क के जीवन भर में संचयी, पुराने प्रभावों में निहित है। 4। व्यापक स्वास्थ्य निहितार्थ:

शरीर में माइक्रोप्लास्टिक की उपस्थिति को पुरानी सूजन, कोशिकाओं पर ऑक्सीडेटिव तनाव और न्यूरोलॉजिकल क्षति से जोड़ा गया है।

प्रारंभिक अध्ययन माइक्रोप्लास्टिक एक्सपोज़र और दिल के दौरे और स्ट्रोक के उच्च जोखिम के बीच एक संभावित लिंक का सुझाव देते हैं, क्योंकि धमनी पट्टिका में कण पाए गए हैं।

कुछ शोध अल्जाइमर और पार्किंसंस जैसे माइक्रोप्लास्टिक और न्यूरोडीजेनेरेटिव रोगों के बीच संबंध की ओर इशारा करते हैं, क्योंकि कण रक्त-मस्तिष्क बाधा को पार कर सकते हैं। हालांकि स्वास्थ्य जोखिमों का पूरा दायरा अभी भी उजागर किया जा रहा है, मौजूदा साक्ष्य दृढ़ता से बताते हैं कि एकल-उपयोग प्लास्टिक पानी की बोतलों का व्यापक, दीर्घकालिक उपयोग एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता है। कई स्वास्थ्य विशेषज्ञ और संगठन इन जोखिमों को कम करने के लिए कांच या स्टेनलेस स्टील की बोतलों जैसे पुनः प्रयोज्य विकल्पों में बदलाव की वकालत कर रहे हैं।

रिटायर्ड प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट-152107 पंजाब

हिंदी दिवस का संदेश: मातृभाषा में शिक्षा ही वास्तविक प्रगति

(भाषा से जुड़ता है समाज और संस्कृति मातृभाषा में शिक्षा ही वास्तविक राष्ट्रनिर्माण का मार्ग)

मातृभाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि हमारी पहचान और संस्कृति से जुड़ाव का माध्यम है। नई शिक्षा नीति (2020) ने कक्षा 5 तक मातृभाषा में शिक्षा पर बल दिया है, जिससे बच्चों की समझ, आत्मविश्वास और भागीदारी बढ़ेगी। अंग्रेज़ी का महत्व अपनी जगह है, परंतु प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में ही सबसे प्रभावी है। चुनौतियों के बावजूद मातृभाषा आधारित शिक्षा से ड्रॉपआउट दर घटेगी, रचनात्मकता बढ़ेगी और बच्चा अपनी जड़ों से जुड़ा रहेगा। हिंदी दिवस हमें यही संदेश देता है कि मातृभाषा ही सच्ची शिक्षा और राष्ट्रनिर्माण का आधार है।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

भाषा केवल संवाद का साधन नहीं है, बल्कि यह हमारी पहचान, संस्कृति और समाज से जुड़ने का आधार है। जिस भाषा में हम सोचते, सपने देखते और अभिव्यक्त होते हैं, वही हमारी मातृभाषा कहलाती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में मातृभाषा का महत्व और भी बढ़ जाता है। हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य लोगों में हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता और गर्व का भाव पैदा करना है। हिंदी दिवस केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार का अवसर नहीं है, बल्कि यह मातृभाषाओं के महत्व और शिक्षा में उनके उपयोग पर विचार करने का भी अवसर है।

मातृभाषा व्यक्ति की सोच, संस्कार और भावनाओं से गहराई से जुड़ी होती है। यह बच्चों के लिए सीखने का सबसे स्वाभाविक और सहज माध्यम है। जब कोई बच्चा अपनी भाषा में शिक्षा ग्रहण करता है तो वह अधिक आत्मविश्वास और रुचि से सीखता है। मातृभाषा बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता को विकसित करती है, यह उन्हें सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान से जोड़ती है, मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाला छात्र बेहतर तरीके से अपनी बात कह पाता है और यह शिक्षा को रटने की बजाय समझने की प्रक्रिया बनाती है।

भारत सरकार ने 34 वर्षों बाद 2020 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की। इस नीति ने शिक्षा के क्षेत्र में बड़े बदलाव करने का मार्ग प्रशस्त किया। सबसे अहम निर्णय था कि कक्षा 5 तक और जहां संभव हो वहां 8वीं तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा होना चाहिए। यह निर्णय इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे बच्चों को शिक्षा उसी भाषा में मिलेगी जिसमें वे घर और समाज में बातचीत करते हैं। अनुसंधानों से भी यह सिद्ध हुआ है कि मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा मिलने से बच्चे की समझ बेहतर होती है, ड्रॉपआउट दर कम होती है और कक्षा में उनकी भागीदारी अधिक होती है।

भारतीय संविधान भी मातृभाषा में शिक्षा का समर्थन करता है। अनुच्छेद 350A कहता है कि राज्यों को भाषाई अल्पसंख्यकों के बच्चों के लिए मातृभाषा में शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। कोठारी आयोग (1964-66) ने सुझाव दिया था कि आदिवासी क्षेत्रों में प्रारंभिक वर्षों में शिक्षा स्थानीय जनजातीय भाषा में होनी चाहिए। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) में भी यह प्रावधान किया गया कि जहां तक संभव हो, शिक्षा का माध्यम बच्चे की मातृभाषा हो।

आज की सबसे बड़ी समस्या यह है कि अभिभावक अंग्रेजी माध्यम स्कूलों को ही श्रेष्ठ मानते हैं। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में माता-पिता बच्चों को इंग्लिश मीडियम स्कूलों में भेजने की होड़ में लगे रहते हैं। वे मानते हैं कि अंग्रेजी ही सफलता की कुंजी है। शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान दिए बिना केवल ₹अंग्रेजी₹ को प्राथमिकता दी जाती है। ग्रामीण भारत में निजी अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में दाखिले की संख्या तेजी से बढ़ रही है। लेकिन सच्चाई यह है कि भाषा कभी भी सफलता की गारंटी नहीं हो सकती। असली सफलता अच्छी शिक्षा, आत्मविश्वास और ज्ञान पर आधारित होती है। यदि बच्चे को ऐसी भाषा में शिक्षा दी जाए जिसे वह समझ ही नहीं पाता, तो न तो उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा और न ही वह शिक्षा का सही लाभ ले पाएगा।

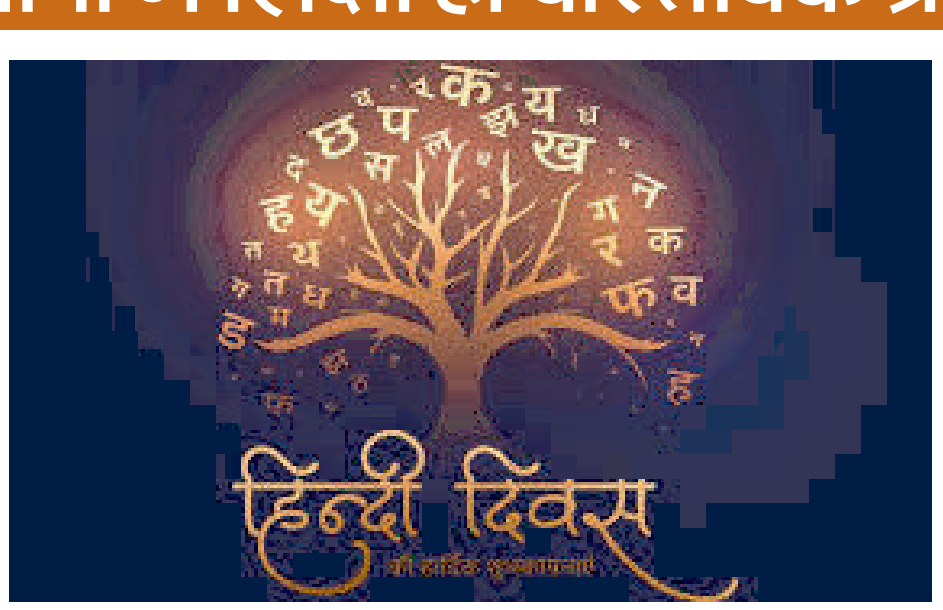

मातृभाषा में शिक्षा देने के अनेक लाभ हैं। बच्चा उसी भाषा में आसानी से सोच सकता है जो उसकी मातृभाषा है। अपनी भाषा में सीखने से भयमुक्त वातावरण मिलता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। मातृभाषा में शिक्षा से बच्चा अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़ा रहता है। जब शिक्षा सरल और बोधगम्य होगी तो बच्चे स्कूल छोड़ेंगे नहीं। मातृभाषा में सोचने और व्यक्त करने से सृजनात्मक क्षमता भी विकसित होती है।

लेकिन इस व्यवस्था को लागू करने में कई व्यावहारिक समस्याएँ सामने आती हैं। भारत में भाषाओं और बोलियों की बहुत अधिक विविधता है। कई भाषाओं के पास मानकीकृत लिपि या पर्याप्त शिक्षण सामग्री नहीं है। प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है, जो बहुभाषी कक्षाओं को संभाल सकें। नई पुस्तकों और प्रशिक्षण पर अतिरिक्त खर्च आएगा। साथ ही, अभिभावकों की मानसिकता भी एक बड़ी चुनौती है जो अंग्रेजी को ही श्रेष्ठ मानती है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। बहुभाषी शिक्षा के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएँ। मातृभाषाओं में गुणवत्तापूर्ण किताबें तैयार की जाएँ। अभिभावकों को जागरूक करने के लिए अभियान चलाए जाएँ ताकि वे समझें कि मातृभाषा में शिक्षा बच्चों के लिए अधिक लाभकारी है। विभिन्न राज्यों में मातृभाषा आधारित शिक्षा के प्रयोग किए जाएँ और उनकी सफलता के आधार पर आगे बढ़ा जाए। डिजिटल शिक्षा सामग्री को भी स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराया जाए।

दुनिया के कई देशों में मातृभाषा में शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है। फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली विश्व में सर्वोत्तम मानी जाती है और वहां प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा पर ही जोर दिया जाता है। जापान और दक्षिण कोरिया ने अपनी भाषा में शिक्षा देकर विश्व स्तर पर आर्थिक और तकनीकी प्रगति हासिल की। यूनैस्को भी लगातार इस बात पर जोर देता रहा है कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए।

हिंदी दिवस हमें यह याद दिलाता है कि अपनी भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान का आधार है। यदि हम चाहते हैं कि नई पीढ़ी आत्मविश्वासी, ज्ञानवान और रचनात्मक बने तो हमें शिक्षा में मातृभाषा का स्थान सुनिश्चित करना होगा। हिंदी सहित सभी मातृभाषाओं का सम्मान करना आवश्यक है।

मातृभाषा में शिक्षा देने का विचार कोई नया नहीं है, लेकिन इसे व्यावहारिक रूप से लागू करने की ज़रूरत है। अंग्रेजी का महत्व अपनी जगह है, लेकिन प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही सबसे प्रभावी सिद्ध हो सकती है। हमें यह धारणा तोड़नी होगी कि केवल अंग्रेजी माध्यम से ही सफलता मिलती है। सफलता का असली आधार है— ज्ञान, समझ और आत्मविश्वास।

इस हिंदी दिवस पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपनी भाषा और संस्कृति के महत्व को पहचानेंगे, अभिभावकों को जागरूक करेंगे और बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। यही वास्तविक राष्ट्र निर्माण की दिशा में हमारा योगदान होगा।

झारखंड से राउरकेला होते हुए बिहार जा रहा करोड़ों रूपये का शराब जप्त ,चालक गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची आगामी शारदीय नवरात्र के ठीक पहले झारखंड के सिमडेगा जिले में पुलिस ने बिहार जा रहे एक ट्रक से एक करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की अवैध शराब जब्त की और उसके चालक को गिरफ्तार कर लिया. अधिकारियों ने यह जानकारी दी. सिमडेगा के पुलिस अधीक्षक मोहम्मद अर्शी ने बताया कि पंजाब से राउरकेला और सिमडेगा होते हुए बिहार जा रहे ट्रक को रांची-राउरकेला मुख्य मार्ग पर बीरू में पुलिस शिविर के निकट रोका गया. अर्शी ने पत्रकारों से कहा, 'पंजाब से राउरकेला और सिमडेगा होते हुए अवैध शराब को पटना ले जाने के संबंध में एक गुप्त सूचना मिलने के बाद कार्रवाई करते हुए पुलिस ने रांची-राउरकेला मुख्य मार्ग पर बीरू स्थित पुलिस शिविर के निकट वाहन को रोका.

खलासी भाग गया, जबकि चालक गिंदर सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया. चालक पंजाब के मोगा जिले के सदर पुलिस थाने के अंतर्गत निधानवाला

उत्कलीय परंपरा अनुसार सरायकेला में आज से सोलह दिनों तक दुर्गा पूजा

1947 में हुए गवर्नर जेनरल व सरायकेला स्टेट के बीच उस मार्जार एग्रीमेंट का घोर उलंघन, आज 16 पूजा को मान्यता ही नहीं

कार्तिक कुमार परिच्छा - स्तम्भ कार

सरायकेला मे 16 दिनों तक चलने वाली दुर्गापूजा का आरंभ आज अष्टमी तिथी से श्रीगणेश है ।यह उस सोलह वर्षीया वीरांगना मां की पूजन है जो आज के अन्य मतानुसार नौ-दिनात्मक नवरात्र बालिका पूजन से पृथक है ।सरायकेला में होनेवाली पूजा तांत्रिक मान्यता से समुचे उत्कल प्रदेश की तरह होती है ।यही वजह है कि कभी ओडिशा का जिला रहा सरायकेला को जबरन बिहार फिर झारखंड में रखे जाने के बाद आज सोलह दिनात्मक पूजा की विशेषता देखने को मिलता तो जरूर है पर सरकारी स्तर पर कोई महत्व नहीं दिया जाना इसकी ऐतिहासिक विरासत की मर्यादा को खत्म करता है । विशेष कर पूरी मंदिर , तमाम देशी रियासत राज घराने,अमित के सैन्य अखाड़े तथा वीर कलिंग की सैनानियों, सेनाध्यक्षों के घरों व मंदिरों में इस पूजा का प्रचलन आज भी है ।

कोई बाला(कन्या) तब तक मां नहीं बनती जब वह सही उम्र पर संसर्गसक्षम होकर मां बनने लायक नहीं हो जाती एवं उसे सारे शस्त्रों की सही संचालन हेतु मानसिक व शारिरिक रूप में दक्ष नही हो जाती ।फिर भक्तों की मां बन दुर्गती को नाश करने वाली दुर्गा कैसे कहला पाती ? अतः: सोलह दिन का पित्रृ पक्ष एवं मातृ पक्ष के बीच स्पर्श तिथी यानी कल से उत्कल में 16 दिनात्मक पुजा का इस अष्टमी से आगाज होगा ।

सर्व प्रथम दुर्गा पूजा परम्परा कर्नाटक /मैसूर से या बंगाल से राजाओं द्वारा नहीं वल्कि ओडिशा से प्रारंभ हुआ था सुरथ के द्वारा ।जहां सोलह दिनों का दशहरा आज भी ओडिशा की भांती उसके विछिन्न स्थानों में होता है ।इतिहास गवाह है, दशहरा सबसे पहले ईसापूर्व 300 पुरी में भी प्रारंभ हुआ था ।

जब मां ने महिषासुर वध की तो षडषी तरूणी के रूप में थी दुर्गा, ऐही व्याख्या करता हमारा दूर्गा सप्तशती या चंडी पुराण मार्कंडेय ऋषि के सौजन्य से ।जिस में नायक रहे हैं चेदी वंशीय राजा सुरथ । वे सुरथ कलिंग के राजा थे नकी किसी अन्य प्रदेशों के। जिन्होने इन्हीं तिथियों में मिट्टी की प्रतिमा स्थापित कर पूजन पर वल दिया है ।महिषासुर को मारने हेतु दुर्गा को सभी देवताओं ने शस्त्र अर्पित किये थे ,सारे आयुधों का संचालन निमित्त युवा अवस्था प्राप्त करना जरूरत था , जिसे हर राजघराने एवं सैन्य परिवारों में आज भी निष्ठा पूर्वक 16 दिनों की पूजा में तीनों समय प्रसाद मां को अर्पित होता है ।इसे ओडिया भाषा में सोलह पूजा कहते हैं ।

सरायकेला स्टेट का विलय दस्तावेज में जाये तो सरायकेला राज्य का हर ऐतिहासिक संस्कृति का देखरेख का जिम्मा ओडिशा सरकार को तत्कालीन केंद्र ने लिखित दिया था ।कारण सरायकेला का विलय सरादार पटेल के समक्ष ओडिशा में रखे जाने हेतु महा राजा आदित्य प्रताप एवं गवर्नर जेनरल भारत के बीच सरदार पटेल के समक्ष कटक में हुआ था । पर इसे जबरन बिहार में लाने के बाद नतो ओडिशा को लौटाया नाही किसी की भी सरकार में झारखंड में परंपराओं को संरक्षण दिया जा रहा है ।

आज रियासत की इष्टदेवी मां पाउडी को भी पराये मानने लगे हैं , उधर सरायकेला स्टेट का पूजा जिसे गृहमंत्रालय के आदेश से झारखंड सरकार कराती है उसे 16 पूजा से कोई लेना देना नहीं है। जो घोर विरोधाभास प्रस्तुत करता उस विलय दस्तावेज व केंद्र व राज्य के बीच धार्मिक आस्था परंपरागत तरीकों का अनुपालन पर ।अब इस कला नगरी सरायकेला की दुर्गा की मृणमयी (मिट्टी) की इस मुर्ति में जाएं उम्र सोलह की दिख रही है ,वीरागंना की जोश भरी आंखों से वीर रस का वर्षा तो होठ से वात्सलता की ममता भरी । भक्तों यानी उनके जनता सभी पुत्र कन्या के ऊपर ।जिसे शेष पंचमी से षष्ठी , सप्तमी , अष्टमी , नवमी फिर तिथी को पूजन के बाद विसर्जित की जायेगी इस मिट्टी की मूर्ति को ।

यही वजह रही है की सरायकेला देश-दुनियां के कला पटल पर शदियों से चर्चा का विषय रहा है चाहे युरोप हो चाहे अमेरिका ,चाहे पूजा-अर्चना हो या कलात्मक छऊ की ज्ञान गंगा ।

उत्कलीय परंपरा की इस ज्ञान की गहरी समंदर में मोती ढुंढ पाना आसान काम नहीं ।खोर्धा से सिंहभूम तक के ज्ञानी पुरखों के इसी सरायकेला के जानकर पुरूष एक एक कर छोड़ चले गये काफी पहले । जो वास्तविक युद्ध के अखाड़े चलाते थे आजादी के पहले तक जहां होती थी दुर्गा पूजा ।सरायकेला की उजड़े विरासत संभालने में लोग यहां कमजोर पड़ रहे हैं लोकतंत्र के मकड़े जाल में ।सच तो यहां किसी भी सरकार मे सही मायने में मूल वासी लोगों प्रतिनिधित्व ही नहीं हो पा रहा सरायकेला के प्रति ।कुली से कलेक्टर , संतरी से सचिव तक बाहरी उत्कलीय (जिसकी कला -संस्कृति, आध्यात्म उन्नत) विरासत को समझ पाने के लिए सदैव कम पड़ते हैं ।सच पुछे तो आज जरूरत है हमे इसकी गूढ़ रहस्य को जानने, समझने, क्रियान्यवयन करने एवं संरक्षण देने की ।प्रतिकुल परिस्थिति में स्वयं को जींदा रखने की ।

अगर हम वेदों मे से आदि वेद ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं से होते हुए मार्कंडेय ऋषि द्वारा रचित दुर्गा शप्तशती में गृहीत श्लोक वेद के 10वें मंडल में आगे दुर्गा कहतीं हैः-

₹अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।

यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।।₹

अर्थात :-

मैं स्वयं ही उस ब्रह्मात्मक तत्त्व का उपदेश करती हूँ जिसका सेवन देवताओं और मनुष्यों नेऐ भी किया है। मैं स्वयं ब्रह्मा हूँ। मैं जिसे चाहती हूँ रक्षा करती हूँ, जिसे चाहती हूँ सर्वश्रेष्ठ बना देती हूँ, जिसे चाहती हूँ सृष्टि कर्ता ब्रह्मा बना देती ,जिसे चाहती हूँ उसे मेधा युक्त मानव , गुरु के समान ज्ञानवान बना देती हूँ ।

इजराइल के हमले, अरब की नाराज़गी और भारत का संतुलन

राजेश जैन

इजराइल ने छह मुस्लिम देशों—गाजा (फिलिस्तीन), सीरिया, लेबनान, कतर, यमन और ट्यूनीशिया—पर हवाई और ड्रोन हमले किए। इन हमलों में 200 से अधिक लोग मारे गए और 1000 से ज्यादा घायल हुए। इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने इन हमलों का बचाव करते हुए कहा कि इजराइल वही कर रहा है जो 9/11 के बाद अमेरिका ने किया था यानी आतंकवाद को उसकी जड़ों तक जाकर खत्म करने की कोशिश लेकिन इस घटनाक्रम ने एक बार फिर अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में बड़ी हलचल पैदा कर दी है। ऐसे समय में भारत के लिए यह सवाल और अहम हो जाता है कि उसे अपनी विदेश नीति किस तरह साधनी चाहिए।

भारत के सामने चुनौतियां

भारत के लिए यह घटनाक्रम सीधे असर डालने वाला है। भारत की विदेश नीति हमेशा संतुलन पर टिकी रही है। एक तरफ इजराइल भारत का अहम रक्षा सहयोगी है, तो दूसरी तरफ अरब देश ऊर्जा आपूर्ति और प्रवासी भारतीयों की वजह से बेहद महत्वपूर्ण हैं। ऊर्जा सुरक्षा सबसे बड़ी चुनौती है। दरअसल, भारत अपनी कुल तेल ज़रूरतों का 85% आयात करता है, जिसमें से अधिकांश खाड़ी देशों से आता है। यदि यमन, कतर या सऊदी अरब में अस्थिरता बढ़ी तो इसका सीधा असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। दूसरी चुनौती खाड़ी देशों में रह रहे 80 लाख भारतीयों की सुरक्षा है। वहां संघर्ष बढ़ने पर उनकी जान और रोजगार दोनों संकट में आ सकते हैं।

तीसरी चुनौती रणनीतिक साझेदारी है। भारत-इजराइल रिश्ते डिफेंस, साइबर सिक्योरिटी, कृषि और टेक्नोलॉजी तक गहराई से जुड़े हैं, लेकिन ओआईसी के सदस्य देशों का दबाव भी भारत पर रहता है। चौथी चुनौती कूटनीतिक संतुलन की है। भारत ने परंपरागत रूप से फिलिस्तीन का समर्थन किया है, लेकिन अब इजराइल से भी करीबी रिश्ते हैं। ऐसे में भारत को तय करना होगा कि किस हद तक बयानबाजी करे और किस हद तक चुप रहे। पांचवीं चुनौती आतंकवाद का मुद्दा है। भारत इजराइल के आतंकवाद विरोधी रुख से सहानुभूति रख सकता है, लेकिन गाजा और फिलिस्तीन में हो रहे मानवीय संकट को अनदेखा करने से भारत की छवि पर असर पड़ेगा।

भारत के विकल्प और विदेश नीति की दिशा

भारत के पास कई विकल्प हैं। सबसे पहले उसे मानवीय दृष्टिकोण अपनाना चाहिए और गाजा सहित अन्य प्रभावित देशों में हो रहे संकट पर चिंता जतानी चाहिए। इससे भारत की छवि एक संवेदनशील राष्ट्र की बनेगी। भारत शांति और मानवीय सहायता की पहल भी कर सकता है। दूसरा विकल्प ऊर्जा आपूर्ति का प्रबंधन है। भारत को अमेरिका, रूस और अफ्रीका जैसे वैकल्पिक स्रोतों पर ध्यान देना होगा और घरेलू नवीकरणीय ऊर्जा पर भी निवेश बढ़ाना होगा ताकि ऐसे संकटों का असर कम हो।

तीसरा रास्ता बहुपक्षीय मंचों का उपयोग है। संयुक्त राष्ट्र, ब्रिक्स और जी-20 जैसे मंचों पर भारत को संतुलित भूमिका निभानी चाहिए। न इजराइल का खुला समर्थन और न मुस्लिम देशों का अंधा विरोध, बल्कि संवाद और मध्यस्थता की पेशकश ही भारत को जिम्मेदार शक्ति बनाएगी। चौथा कदम प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा योजना बनाना होगा। भारत को पहले से तैयारी करनी होगी कि यदि खाड़ी देशों में हालात बिगड़ते हैं तो वहां रह रहे भारतीयों को सुरक्षित कैसे निकाला जाए। पांचवां विकल्प रणनीतिक स्वायत्तता पर जोर देना है, जिससे यह संदेश जाए कि भारत की विदेश नीति अमेरिका या किसी और शक्ति से प्रभावित नहीं है बल्कि अपने राष्ट्रीय हित और वैश्विक शांति पर केंद्रित है।

अंतरराष्ट्रीय राजनीति पर असर

इजराइल और मुस्लिम देशों का टकराव नया नहीं है लेकिन हाल के हमले एक बड़े संघर्ष की भूमिका लिखते दिख रहे हैं, खासकर इसलिए कि इसमें छह देश सीधे प्रभावित हुए हैं और यह महज़ इजराइल-फिलिस्तीन विवाद तक सीमित नहीं रहा। कतर में हमास नेताओं को निशाना बनाकर हमला किया गया जिससे युद्धविराम की कोशिशें नाकाम हो गईं। लेबनान में हिजबुल्लाह पर कार्रवाई से पहले से मौजूद सीजफायर टूट गया। सीरिया, जो पहले से अस्थिरता और गृहयुद्ध जैसी स्थिति झेल रहा है, वहां इजराइल के हमले हालात को और बिगाड़ देंगे। यमन में हूती विद्रोहियों पर हमले से सऊदी अरब और अमेरिका के साथ उनके तनाव और गहरे होंगे। ट्यूनीशिया में भले ही सीधा नुकसान नहीं हुआ, लेकिन उत्तरी अफ्रीका तक संघर्ष की लपटें फैलने का खतरा है। गाजा की स्थिति सबसे भयावह है, जहां 150 से अधिक मौतें और सैकड़ों घायल हुए हैं और पहले से तबाह इलाका पूरी तरह संकट में है।

इन हमलों ने वैश्विक स्तर पर दो ध्रुवों को और तेज़ कर दिया है — एक तरफ अमेरिका और उसके सहयोगी, दूसरी तरफ मुस्लिम जगत और उनके समर्थक देश। यूरोप भी असमंजस में है क्योंकि मानवीय संकट पर उसे चुप रहना मुश्किल हो रहा है जबकि चीन और रूस इस मौके का फायदा उठाकर मुस्लिम देशों के करीब जाने की कोशिश करेंगे।

इजराइल के ताज़ा हमलों ने दुनिया को फिर से याद दिलाया है कि पश्चिम एशिया वैश्विक राजनीति का सबसे अस्थिर इलाका है। यहां की आग केवल सीमाओं तक सीमित नहीं रहती बल्कि दुनिया की अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और राजनीति को हिला देती है। भारत जैसे उभरते वैश्विक खिलाड़ी के लिए यह जरूरी है कि वह इस अस्थिरता में संतुलित, संवेदनशील और रणनीतिक विदेश नीति अपनाए। न इजराइल को पूरी तरह गले लगाना सुरक्षित है और न ही अरब देशों को नाराज़ करना। भारत का हित इसी में है कि वह शांति, संवाद और मानवीय मूल्यों का झंडाबरदार बने। यह घटनाक्रम भारत की विदेश नीति के सामने एक बड़ा सबक लेकर आया है—भू-राजनीति की आग में खुद को जलाए बिना, राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए दुनिया में एक जिम्मेदार ताकत की भूमिका निभाना। यही भारत की असली परीक्षा है और यही उसका आने वाला रास्ता।

राजेश जैन

प्रोफेसर उपनाम से जाना जाता था रांची से गिरफ्तार आतंकी दानिश

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , पाकिस्तान समर्थित पैन इंडिया टेरर मॉड्यूल के सरगना अशहर दानिश को लेकर नित्य चौंकाने वाले खुलासे हो रहे हैं। रांची से गिरफ्तार दानिश न केवल इस मॉड्यूल का लीडर और सीईओ था, बल्कि वह इंटरनेट मीडिया की दुनिया में 'प्रोफेसर' के नाम से भी जाना जाता था।

वह विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के जरिए देश भर के युवाओं को कट्टरपंथी विचारधारा से जोड़कर एक आतंकी नेटवर्क तैयार कर रहा था। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल उसकी गतिविधियों की गहन जांच कर रही है और उसके लैपटॉप, मोबाइल फोन और विभिन्न इंटरनेट मीडिया अकाउंट्स को खंगालकर पूरे नेटवर्क की परतें खोलने की कोशिश में है। झारखंड एटीएस भी इस मॉड्यूल को फंडिंग करने वालों की तलाश में जुट गई है।

जांच में पता चला है कि दानिश के गिरोह के सदस्यों को उनकी क्षमता के अनुसार अलग-अलग जिम्मेदारियां दी गई थीं। मुंबई निवासी अफताब, जिसे दिल्ली से गिरफ्तार किया गया था, को देश में अशांति फैलाने और लक्षित हत्याएं (टारगेटेड किलिंग्स) करने का खतरनाक टास्क दिया गया था।

इसी तरह, मध्य प्रदेश के राजगढ़ से गिरफ्तार कामरान कुरैशी की पूरी पृष्ठभूमि भी खंगाली जा रही है। खुफिया एजेंसियों के मुताबिक, यह आतंकी संगठन दो मुख्य समूहों में काम कर रहा था - खिलाफत समूह और लश्कर। इन दोनों का ही मकसद 'गजवा-ए-हिंद' जैसे खतरनाक जिहादी आंदोलनों को बढ़ावा देना था, जिसके लिए वे भारत विरोधी तत्वों को संगठित कर रहे थे।

सेल के खाते से दो करोड़ घोटाले मामले मे बैंक आफ इंडिया गुवा शाखा प्रबंधक निलंबित

सिंहभूम जिले में सुदीप सिंकू पर समेत पाच पर एफ आई आर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

चाईबासा , बैंक ऑफ इंडिया की गुवा शाखा में बड़ा वित्तीय घोटाला सामने आया है. पूर्व शाखा प्रबंधक सुदीप सिंकु पर आरोप है कि उन्होंने स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड के खाते से 2 करोड़ रुपये से अधिक की राशि का गबन किया है. यह घोटाला जमशेदपुर के कदमा शाखा के वरिष्ठ प्रबंधक विश्वजीत कुमार द्वारा की गई विशेष ऑडिट रिपोर्ट में सामने आया. सुदीप सिंकु ने 1 जुलाई 2021 को बिना किसी अनुमति के सेल के खाते से 2 करोड़ 14 लाख 81 हजार 192 रुपये की राशि का अवैध रूप से पे ऑर्डर भुगतान किया था. इस राशि को उन्होंने अपने नियंत्रण में ले लिया था और बाद में इसे अन्नु देवी, मनोज निषाद, पुनामी बोदरा और कन्हैया कुमार साव जैसे लोगों के खातों में ट्रांसफर कर दिया. बाद में इन खातों से पैसे निकाल लिए गए. वर्तमान शाखा प्रबंधक नीलेश कुमार की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है और मामले की जांच कर रही है. आरोपी शाखा प्रबंधक को निलंबित कर दिया गया है. पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है. गुवा थाना प्रभारी नीतीश कुमार ने बताया कि जमशेदपुर कदमा शाखा के वरीय प्रबंधक विश्वजीत कुमार द्वारा कराई गई विशेष लेखा परीक्षा में यह घोटाला सामने आया. जांच में स्पष्ट हुआ कि 1 जुलाई 2021 को गुवा शाखा प्रबंधक रहते हुए सुदीप सिंकु ने स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) के खाते से बिना अनुमति दो करोड़ 14 लाख 81 हजार 192 रुपये का अवैध पे ऑर्डर भुगतान किया और राशि अपने नियंत्रण में ले ली.

संवेदनहीनता उजागर करती आपदाएं

डा.वेदप्रकाश

विगत लंबे समय से देश के विभिन्न प्रदेशों में भारी बारिश, बादल फटने,बाढ़ और भूस्खलन से आपदाएं जारी हैं। क्या ये आपदाएं शासन-प्रशासन और कुछ लोगों की संवेदनहीनता को उजागर नहीं करती? नदी, नाले, पेड़-पौधे, जंगल और पर्वत पर्यावरणीय संरचना के अभिन्न एवं महत्वपूर्ण अंग है। कहीं विकास के नाम पर तो कहीं लालच की प्रवृत्ति के चलते इस पर्यावरणीय संरचना को बिगाड़ा जा रहा है। पहाड़ों से अनुचित छेडछाड, नदी, पर्वत और धरती से अवैध खनन, अतिक्रमण और पेड़ों की अवैध कटाई जारी है। नदी- नालों के बहाव क्षेत्र में अवैध बस्तियां बसाई जा रही हैं। राजनीति और भ्रष्टाचार अवैध तंत्र को पोषित कर रहे हैं। अवैध के विरुद्ध कानून और कार्रवाई हाशिए पर है।

उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू कश्मीर, लद्दाख और पूर्वोत्तर के प्रदेश हिमालयी श्रंखला में पड़ने वाले महत्वपूर्ण प्रदेश हैं। इस श्रंखला के कई पर्वत, ग्लेशियर एवं क्षेत्र अत्यधिक संवेदनशील हैं, जिनसे थोड़ी छेड़छाड़ भी गंभीर आपदा का कारण बन रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण जहां एक ओर अधिक बारिश, बे मौसम बारिश, अधिक गर्मी, अधिक सर्दी, अधिक बर्फबारी और सूखा आदि रूपों में पर्यावरणीय असंतुलन पैदा हो रहा है तो वहीं दूसरी ओर ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में सड़क एवं सुरंगों के निर्माण की प्रक्रिया में पेड़ों एवं पहाड़ों की अंधाधुंध कटाई और विस्फोट पर्वतों की आंतरिक व्यवस्था को गहरे प्रभावित कर रहे हैं। वर्ष 2013 की केदारनाथ आपदा पर्वतीय क्षेत्र में हलचल का एक बड़ा संकेत थी। उस आपदा में जान माल का भारी नुकसान होने के बाद भी घाटी में फिर से भारी निर्माण कार्य जारी हैं, फिर हमने भारी तबाही से क्या सबक लिया?

विगत कुछ दिनों में ही पर्वतीय राज्यों उत्तराखंड, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर से बाढ़ एवं आपदा के कारण लगभग 28 हजार करोड़ रुपए के नुकसान का अनुमान है। इन प्रदेशों से कई गांवों का नामोनिशान मिट गया तो हजारों गांव प्रभावित भी हुए हैं और कई सौ लोगों की मौत हो चुकी है। इसके अतिरिक्त पंजाब के सभी 23 जिले बाढ़ से जूझ रहे हैं। लगभग 17 हजार गांव बाढ़ की चपेट में हैं। खेती के साथ-साथ लाखों लोग प्रभावित हुए हैं। राजस्थान में भी बाढ़ और भारी बारिश से सैकड़ों लोगों की मौत हो चुकी है और हजारों मकान गिर चुके हैं।

राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के आंकड़े बताते हैं कि बादल फटने, बाढ़ और भूस्खलन की घटनाएं विगत वर्षों की तुलना में इस बार लगभग दो गुनी हो चुकी है। उत्तराखंड के धराली-भराली से शुरू हुआ प्राकृतिक आपदाओं का सिलसिला हिमाचल, जम्मू-कश्मीर से होते हुए राजस्थान, पंजाब और दिल्ली तक पहुंच चुका है। राष्ट्रीय राजधानी में भी यमुना नदी उफान पर है। जलस्तर बढ़ने से नाले बंद हो चुके हैं और सड़कों पर पानी भरने लगा है। राष्ट्रीय राजधानी के संबंध में ध्यातव्य है कि विगत कई दशकों से नदी और नालों से गाद नहीं निकाली गई है। ड्रेनेज प्लान भी पुराने ही चल रहे हैं। नदी बाढ़ क्षेत्र अतिक्रमण के गिरफ्त में है। क्या यह शासन- प्रशासन की संवेदनहीनता का द्योतक नहीं है।

विभिन्न पर्वतीय और मैदानी क्षेत्रों में नदियों से अवैध खनन जारी है। पहाड़ों को अवैध ढंग से काटने के समाचार भी लगातार छपते हैं। विगत दिनों संसद के प्रश्नोत्तर काल में केंद्रीय पर्यावरण राज्य मंत्री ने बताया कि राजस्थान के अरावली क्षेत्र के 20 जिलों में पिछले पांच वर्षों में अवैध खनन के 2096 मामले दर्ज किए गए हैं। क्या यह शासन-प्रशासन की संवेदनहीनता का प्रमाण नहीं है? देश के बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान से प्रतिदिन अवैध खनन और खनन माफियाओं के आतंक के समाचार आते हैं। क्या भिन्न-भिन्न रूपों में खनन और अतिक्रमण पर्यावरणीय घटकों से छेड़छाड़ और शासन-प्रशासन की मिलीभगत के प्रमाण नहीं हैं?

यह भी विडंबना ही है कि केवल मानसून अथवा किसी आपदा के समय ही अवैध खनन, अतिक्रमण और प्रकृति से छेड़छाड़ की बातों पर चर्चा होती है, उसके बाद फिर ढाक के तीन पात है। लगातार बढ़ती आपदाओं को ध्यान में रखते हुए आज यह आवश्यक है कि पर्वतीय राज्यों के बीच आपसी समन्वय को मजबूत करते हुए सतत और व्यापक नीतियां बनें। समूचे देश में नदियों का बाढ़ क्षेत्र और नालों का प्रभाव क्षेत्र परिभाषित हो। उस क्षेत्र में किसी भी प्रकार का निर्माण और अतिक्रमण प्रतिबंधित और दंडनीय किया जाए। प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति में त्वरित सूचना एवं पूर्व अनुमान तकनीक विकसित की जाएं जिससे जान माल का कम से कम नुकसान हो।

वेद और हमारी सनातन ज्ञान परंपरा हमें प्रकृति के साथ जीने की व्यापक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। आज यह भी आवश्यक है कि सभी उसे जानें और तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा... अर्थात त्यागपूर्ण भोग के जीवन दर्शन को समझें। सभी प्रकृति और पर्यावरणीय घटकों के प्रति संवेदनशील हों और इनसे किसी भी प्रकार की अवैध छेडछाड के लिए कठोर दंडात्मक कानून बनाकर तत्काल लागू किए जाएं।

असिस्टेंट प्रोफेसर
किरोड़ीमल कालेज,दिल्ली विश्वविद्यालय

संविधान में हिंदी

डॉ. नीरज भारद्वाज

भारतवर्ष के स्वतंत्र होने के बाद उसके संविधान बनने में भाषाओं का महत्त्व या योगदान की बात करें तो यह भी बहुत ही रोचक है। डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी अपनी पुस्तक प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिन्दी में लिखते हैं कि, 'फरवरी 1948 में संविधान का जो प्रारूप प्रस्तुत किया गया, उसमें राजभाषा विधेयक कोई उपबंध नहीं था। इतना ही उल्लेख था कि संसद की भाषा अंग्रेजी या हिंदी होगी।' विचार करें तो अंग्रेजों के आगमन और अंग्रेजों के भारत में पैर जमाने तक हिंदी-उर्दू के बीच झगड़ा खड़ा हुआ था और अब स्वतंत्रता के बाद हिंदी-अंग्रेजी का झगड़ा खड़ा हो गया। कहने का भाव यह है कि हिंदी अपने ही देश में अपने ही लोगों से लड़ाई लड़ रही थी। बहरहाल जो भी हो, भारतीय संविधान लागू होने से पूर्व 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में लेने के विचार पर सहमति बन गई और संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थान मिला।

जहाँ तक राजभाषा की बात है, राजभाषा उस भाषा को कहा जाता है जो राज-काज अर्थात प्रशासन की भाषा हो। राज-काज अथवा सरकारी काम-काज या कार्यालय की भाषा। राजभाषा देश के प्रशासक वर्ग की भाषा है। इसका प्रयोग मुख्यतः चार क्षेत्रों में अपेक्षित है- शासन, विधान, न्यायपालिका और कार्यपालिका। इस प्रकार हिंदी भाषा को भारतीय संविधान में स्थान मिला और उसके कार्य करने की बातों को भी स्पष्ट किया गया।

संविधान की दृष्टि से बात करें तो अनुच्छेद 120, 210, 343 से 351 तक इन सभी में भाषा से जुड़े तत्वों के बारे में चर्चा की गई है। हम यहाँ पर इन सभी अनुच्छेदों पर संक्षेप में चर्चा कर रहे हैं। अनुच्छेद 120 में संसद में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा के बारे में कहा गया है।अनुच्छेद 210 में राज्य विधान मंडलों में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा। अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार देवनागरी में लिखित हिंदी संघ की राजभाषा है अर्थात हिंदी संघ की राजभाषा के रूप में स्थापित हो गई।अनुच्छेद 343 (2) के अनुसार संविधान के लागू होने के समय से 15 वर्ष की अवधि तक संघ के सभी कार्यों के लिए पहले की भाँति अंग्रेजी का प्रयोग करने की व्यवस्था की गई। दूसरे शब्दों में कहें तो अंग्रेजी सह संघीय भाषा के रूप में उभरकर सामने आई। अनुच्छेद 343 (3) में संसद को यह अधिकार दिया गया है कि वह 1965 के बाद भी सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने के बारे में व्यवस्था कर सकती है।

इस बात पर प्रकाश डालते हुए डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी लिखते हैं कि, 'राजभाषा अधिनियम 1963 में अन्य बातों के होते हुए धारा 3 (3) में सरकारी कार्यालयों से जारी होने वाले सभी दस्तावेजों में हिंदी और अंग्रेजी का अनिवार्य रूप से प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे राष्ट्रीय स्तर पर द्विभाषिकता की स्थिति पैदा हो गई।' इस मत से एक बात तो स्पष्ट हो गई कि अब कोई भी सरकारी कागजात अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में जन के सामने आयेगें और यहाँ एक नया विषय अनुवाद भी सरकारी कार्यालयों के लिए आवश्यक हो गया। इन सरकारी कार्यों में सामान्य आदेश, प्रेस विज्ञप्तियाँ, संविदाएँ, नियम, अधिनियम, टेंडर फार्म, टेंडर नोटिस, लाइसेंस, सूचना, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट, परमिट, संसद के दोनों सदनों के सरकारी पत्र आदि सभी कुछ अनिवार्य रूप से दोनों भाषाओं अर्थात हिंदी और अंग्रेजी में जारी करने की बात कही गई।

अनुच्छेद 344 में राजभाषा के लिए आयोग और संसद समिति के गठन की व्यवस्था की गई।अनुच्छेद 345 में राज्य की राज्यभाषा या राज्यभाषाएँ पर चर्चा है। अनुच्छेद 346 में एक राज्य दूसरे राज्य के साथ अथवा राज्य और संघ के बीच पत्राचार की भाषा की व्यवस्था पर विचार है।अनुच्छेद 347 में किसी राज्य के जन समुदाय के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष अनुबंध है।अनुच्छेद 348 में उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों तथा अधिनियमों, विनियमों आदि में प्रयुक्त भाषा। अनुच्छेद 349 में भाषा से संबंधी कुछ विधियों को अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया।अनुच्छेद 350 में किसी व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा।350 (क) में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएँ।350 (ख) में भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकार।अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश हैं अर्थात हिंदी का विकास ऐसे किया जाए कि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

संवैधानिक दृष्टि से भाषा की यह बात यहीं समाप्त नहीं होती, बल्कि स्वतंत्र भारतवर्ष में तो भाषाएं जुड़ती गई और अष्टम अनुसूची में वर्तमान में 22 भाषाएँ अपनी जगह बना चुकी हैं। सन् 1950 में इसमें 14 भाषाएँ थी, 1967 में एक भाषा सिंधी को जोड़ा गया, 1992 में तीन भाषाओं को कोंकणी, नेपाली, मणिपुरी और 2003 में चार भाषाओं को जोड़ा गया बोडो, डोगरी, संथाली और मैथिली।

इतना ही नहीं, अब शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिलने का कार्यक्रम शुरू हुआ और पहली शास्त्रीय भाषा का दर्जा सन् 2004 में तमिल को मिला। बहुत से पाठकों के मस्तिष्क में यह सवाल चल रहा होगा कि संस्कृत विश्व की सभी भाषाओं की जननी है, तो फिर तमिल को पहले कैसे स्थान मिला। भारत में राजनीतिक इच्छा शक्ति के बिना कुछ भी संभव नहीं है। बहरहाल सन् 2005 में संस्कृत को भी शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिल गया। भाषाओं का जुड़ना भारतवर्ष में रूकने वाला नहीं है, इसीलिए भारतीय कक्षाओं में पढ़ाते समय अध्यापक को बहुभाषी शब्दों का प्रयोग करना होता है।

मुख्यमंत्री द्वारा शून्य दुर्घटना संदेश रथ का शुभारंभ

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

समृद्ध ओडिशा, विकसित ओडिशा' के संकल्प को आगे बढ़ाते हुए, मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी ने आज क्योंझर में वाणिज्य एवं परिवहन विभाग द्वारा आयोजित 'शून्य दुर्घटना दिवस' अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर, मुख्यमंत्री ने ओडिशा को दुर्घटना-मुक्त राज्य बनाने का आह्वान किया।इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने जीरो एक्सीडेंट सेल्फी पॉइंट का उद्घाटन किया और वहाँ सड़क सुरक्षा संदेश प्रचारकों को सम्मानित किया। इसके साथ ही, मुख्यमंत्री ने क्योंझर जिले के सभी 13 प्रखंडों में सड़क सुरक्षा जागरूकता और जीरो एक्सीडेंट संदेश प्रचारकों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और सिंगा नेचर अभियान का शुभारंभ किया।

मीडिया से बात करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सुरक्षा केवल सरकार की ज़िम्मेदारी नहीं है। इसके प्रति जागरूक रहना सभी की सामूहिक ज़िम्मेदारी है। भुवनेश्वर में जीरो एक्सीडेंट डे की विशेष सफलता के बाद, क्योंझर इस अभियान को आगे बढ़ाने वाला ओडिशा का पहला ज़िला बन गया है। हमारा लक्ष्य जीरो एक्सीडेंट डे जागरूकता संदेश को हर शहर, गाँव और यहाँ तक कि घर तक पहुँचाना है। स्वयं जागरूक रहें और दूसरों को भी जागरूक करें। सभी क्षेत्रों में सावधानी ही हमें इन दुर्घटनाओं से बचा सकती है।

क्योंझर जिला खनन-प्रधान क्षेत्र है। यहाँ दिन-रात खनिजों का परिवहन होता है। यहाँ से प्रतिदिन हजारों ट्रक, लोडर और भारी वाहन आवागमन करते हैं। इससे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था तो गति पकड़ रही है, लेकिन सड़क सुरक्षा के लिए भी यह एक विशेष चुनौती है, ऐसा मुख्यमंत्री ने कहा। उन्होंने क्योंझर जिले के प्रत्येक नागरिक से सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने और यात्रा करते समय सावधानी बरतने का आग्रह किया। उन्होंने आगे कहा कि हम शून्य दुर्घटना दिवस मना रहे हैं। यह एक ऐसी पहल है जो हमारी सामूहिक जिम्मेदारी को दर्शाती है। खनन और औद्योगिक क्षेत्र से जुड़ी सभी कंपनियों को ड्राइवरों और कर्मचारियों की सुरक्षा को पहली प्राथमिकता देनी चाहिए। भारी वाहनों के नियमित रखरखाव और ड्राइवरों के प्रशिक्षण को महत्व दिया जाना चाहिए। यदि इन सभी का कड़ाई से पालन किया जाए, तो कई दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद सुजीत कुमार, क्योंझर सांसद अनंत नायक, घासीपुरा विधायक बद्री नारायण पात्र, चंपुआ विधायक सनातन महाकुड़, पटना विधायक अखिल नायक, तेलकोई विधायक डॉ. फकीर मोहन नायक, आनंदपुर विधायक अभिमन्यु सेठी, पुलिस महानिदेशक योगेश बहादुर खुरानिया, एसटीए आयुक्त अमिताभ ठाकुर, डीआईजी बृजेश रॉय और जिलाधिकारी हाकिब सिंह प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

सुदामा की भांति मित्रता दोनों निस्वार्थ थी - कथावाचक पंडित श्री राधेश्याम त्रिपाठी वृंदावन

खजराना इन्दौर में पाटीदार धर्मशाला में संगीतमय सात दिवसीय श्री भागवत कथा के सातवें व आखिरी दिन समापन पर सुदामा चरित्र व परीक्षित मोक्ष की कथा सुनाई गई । वृंदावन से पधारे कथावाचक पंडित श्री राधेश्याम त्रिपाठी जी ने कहा कि सुदामा जी के चरित्र से हमें जीवन में आई कठिनाइयों का सामना करने की सीख मिलती है । निस्वार्थ समर्पण ही असली मित्रता है । सुदामा की भक्ति व मित्रता दोनों स्वार्थहीन है । तभी तो वह मित्रता के कारण मिलते हैं । इस चरित्र में मित्रता भक्ति और ईश्वर के प्रति समर्पण भावना से स्नेह का बौध होता है। यहां रिश्ता विश्वास का हो गया है। तभी तो द्वारकाधीश नंगे पैर भागते हुए अपने मित्र को गले से लगाया था । कथा के दौरान राजा परीक्षित मोक्ष व भगवान सुखदेव जी की विदाई का वर्णन भी किया गया। इस अवसर पर भोजन प्रसादी का वितरण हुआ। यहां पाटीदार समाज के कोटवाल परिवार द्वारा यहां श्रीमद् भागवत कथा में आसपास के ग्राम वासियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। यहां जानकारी समाजिक कार्यकर्ता रामेश्वर चौहान जी ने प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

रिपोर्टर हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

भारतीय अस्मिता, राष्ट्रीय एकता और साहित्यिक समृद्धि का उत्सव: गांधीनगर हिंदी सम्मेलन (14 सितंबर हिंदी दिवस विशेष आलेख)

हिंदी हमारे देश की आन-बान-शान है। यह हमारे देश की प्रथम राजभाषा है। पाठकों को बताता चलूं कि इस बार राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी दिवस-2025 एवं पांचवां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन दिनांक 14-15 सितंबर, 2025 को महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्जिबिशन सेंटर, गांधीनगर, गुजरात में किया जा रहा है। इस समारोह की अध्यक्षता माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी करेंगे। विभिन्न मंत्रालयों/विभागो/बैंकों/उपक्रमों/स्वायत संस्थानों/ संवैधानिक निकायों/बोर्डों / संबद्ध कार्यालयों / अधीनस्थ कार्यालयों के प्रमुख, राजभाषा से जुड़े सभी कार्मिकों और राजभाषा का काम देख रहे अन्य अधिकारी/कर्मचारी इस सम्मेलन में अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित करेंगे। हिंदी व इससे जुड़े लोगों के लिए यह बहुत ही पावन व बड़ा अवसर होगा,जब एक ही मंच पर देश के विभिन्न हिस्सों से लोग एक साथ जुड़ेंगे। वास्तव में,यह सम्मेलन केवल भाषाई चर्चा भर नहीं है, बल्कि भारतीय अस्मिता, राष्ट्रीय एकता और साहित्यिक समृद्धि का उत्सव है। यहाँ देशभर से विद्वान, लेखक, पत्रकार, शिक्षाविद और हिंदी प्रेमी एकत्र होकर भाषा के विकास, उसके उपयोग, आधुनिक तकनीक में हिंदी की भूमिका तथा युवाओं में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर विचार करते हैं। बहरहाल, बहुत कम लोग जानते होंगे कि 600 मिलियन से अधिक भाषाओं के साथ हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, साथ ही भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। आंकड़ों की बात करें तो मूल भाषा के रूप में: भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार, हिंदी को लगभग 528 मिलियन (52.8 करोड़) लोग अपनी मातृभाषा के रूप में बोलते हैं, जो देश की कुल जनसंख्या का लगभग 43.6% है, जो अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है।हिंदी को कुल मिलाकर लगभग 609 मिलियन लोग बोलते हैं, जिसमें मूल वक्ताओं के अलावा द्वितीयक वक्ता भी शामिल हैं। भारत में उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश में हिंदी का प्रमुखता से प्रयोग होता है। हिंदी के विभिन्न रूपों में अवधी, भोजपुरी, ब्रज, मैथिली, राजस्थानी और छत्तीसगढ़ी शामिल हैं, जो क्षेत्रीय भाषाओं के रूप में प्रचलित हैं। न केवल भारत बल्कि हिंदी के वक्ता नेपाल, पाकिस्तान, मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद और टोबैगो, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका, ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में भी हैं। पाठकों को बताता चलूं कि मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद और टोबैगो जैसे देशों में हिंदी भाषा को सांस्कृतिक पहचान और शिक्षा में संरक्षित रखा गया है। मॉरीशस में हिंदी भाषा दिवस सरकारी रूप से मनाया जाता है। विश्व में वक्ताओं की दृष्टि से हिंदी का तीसरा स्थान है। इस मामले में अंग्रेजी और मंदारिन (चीन) क्रमशः पहले और दूसरे स्थान पर हैं। अंतर्राष्ट्रीय मंच पर हिंदी की उपस्थिति बढ़ाने के लिये प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है जबकि प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हम 'हिंदी दिवस' मनाते हैं, क्योंकि हिंदी दिवस वर्ष 1949 में हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक के रूप में अपनाए जाने का प्रतीक है।यदि हम यहां पर हिंदी की संवैधानिक स्थिति की बात करें तो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिंदी को आधिकारिक उद्देश्यों के लिये अंग्रेज़ी के साथ भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसे 8वीं अनुसूची में भी सूचीबद्ध किया गया है, जिसमें आधिकारिक प्रयोग के लिये मान्यता प्राप्त 22 भाषाएँ शामिल हैं। हिंदी बहुत ही सरल, सुगम, सहज व वैज्ञानिक शब्दावली लिए हुए विश्व की एक सिरमौर भाषा है, जिसमें अभिव्यक्ति आसान है।हिंदी में 1 लाख से अधिक शब्द हैं, जबकि बोलचाल में हम आमतौर पर 5–10 हज़ार शब्दों का ही उपयोग करते हैं। हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जिसमें 11 स्वर और 33 व्यंजन होते हैं। हिंदी का व्याकरण सुव्यवस्थित है, जिससे शब्दों के निर्माण, वाक्यों के गठन और अर्थ को समझना सरल होता है। इतना ही नहीं, विभिन्न प्रांतों और भाषाओं के लोगों को जोड़ने में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान है। हिंदी अधिक ध्वन्यात्मक भाषा है जबकि अंग्रेज़ी में वर्तनी और उच्चारण में अंतर पाया जाता है। हिंदी की खास बात यह है कि इसका उच्चारण ध्वनि आधारित है। शब्द वैसे ही लिखे जाते हैं जैसे बोले जाते हैं। हिंदी अपना शब्द भंडार संस्कृत, फारसी, अरबी, तुर्की आदि से शब्द ग्रहण करती है। हिंदी की संस्कृति की बात करें तो यह भारतीय परंपरा, धार्मिक ग्रंथ, लोककथाओं से समृद्ध हुई है। हिंदी एक लचीली भाषा है और यह बोली और शैली क्षेत्र विशेष के अनुसार बदलती है। आज का युग डिजिटाइजेशन व एआइ का युग है और डिजिटलीकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) के इस दौर में हिंदी ने भी तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के समय में मोबाइल ऐप, वेबसाइट और सॉफ़्टवेयर में हिंदी भाषा का समर्थन दिया जा रहा है। आज अनुवाद सेवाएँ, वॉइस असिस्टेंट, चैटबॉट आदि हिंदी में उपलब्ध हैं। ई-गवर्नेंस परियोजनाओं में हिंदी को प्राथमिकता दी जा रही है।सच तो यह है कि आधुनिक प्रौद्योगिकी के युग में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न ऐप्लिकेशन, टूल्स व प्लेटफ़ॉर्म्स जैसे कि कंठस्थ, भाषिणी, बोलो-लिखो वॉइस टाइपिंग टूल, चैट जी.पी.टी., गूगल अनुवाद, ओ.सी.आर. सॉफ़्टवेयर, स्पीच-टू-टेक्स्ट टूल्स आदि में भी हिंदी में काम करने की वही सुविधा उपलब्ध है, जो अन्य विदेशी भाषाओं में है। आज विभिन्न स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों में हिंदी माध्यम की शिक्षा प्रदान की जाती है।हिंदी में कबीर, तुलसी, सूर, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा जैसे महान साहित्यकारों ने अमूल्य रचनाएँ दी हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे यूपीएससी, बैंकिंग, रेलवे आदि में हिंदी भाषा का प्रयोग होता है। शोध कार्य, निबंध, परियोजना रिपोर्ट आदि हिंदी में लिखे जाते हैं।एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार हिंदी में प्रतिवर्ष 1 लाख से अधिक पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, जिनमें से कई धार्मिक ग्रंथ, साहित्य, विज्ञान, बच्चों की किताबें और आत्मकथाएँ शामिल हैं। पाठक जानते हैं कि भारत सरकार की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी का उपयोग होता है। यहां तक कि आज विभिन्न सरकारी आदेश, अधिसूचना, फॉर्म, आवेदन आदि हिंदी में उपलब्ध होते हैं। संसद और विधानसभाओं में हिंदी में भाषण, चर्चा और दस्तावेज़ प्रस्तुत किए जाते हैं। आज मीडिया और संचार में हिंदी का जमकर प्रयोग किया जा रहा है। समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, टीवी चैनल और ऑनलाइन पोर्टल हिंदी में समाचार प्रसारित करते हैं। फिल्म, नाटक, वेब सीरीज, विज्ञापन, गीत आदि में हिंदी का व्यापक उपयोग होता है। दिलचस्प बात यह है कि हिंदी सिनेमा (बॉलीवुड) का वार्षिक कारोबार लगभग 15,000 करोड़ से अधिक है। हिंदी फ़िल्में केवल भारत ही नहीं, बल्कि मध्य एशिया, अफ्रीका और यूरोप के कई देशों में भी देखी जाती हैं।सोशल मीडिया (फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, यू ट्यूब, व्हाट्स एप आदि) पर भी हिंदी में लेखन, पोस्ट, टिप्पणी का बड़ा चलन है। आंकड़े बताते हैं कि साल 2023 तक भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में से लगभग 55–60% लोग हिंदी में कंटेंट उपभोग करते हैं। अब कई कंपनियाँ हिंदी में चैटबॉट, वॉइस असिस्टेंट और अनुवाद उपकरण विकसित कर रही हैं। अनुमान है कि 2025 तक हिंदी में एआई आधारित सेवाओं का उपयोग 30% तक बढ़ सकता है। व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र भी हिंदी से अछूते नहीं रहे हैं।स्थानीय बाजारों में उत्पादों का प्रचार हिंदी में किया जाता है। ग्राहक सेवा, हेल्पलाइन, बिलिंग आदि में हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ा है। ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म भी हिंदी में सामग्री प्रदान कर रहे हैं।उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक आदि हिंदी में रचे और प्रकाशित होते हैं। लोकगीत, भजन, धार्मिक ग्रंथ हिंदी या उसके स्थानीय रूपों में प्रचलित हैं। सांस्कृतिक आयोजनों, मेलों और उत्सवों में हिंदी का उपयोग होता है। स्वास्थ्य शिविर, टीकाकरण अभियान और सार्वजनिक घोषणाएँ हिंदी में प्रचारित की जाती हैं।नशीली दवाओं के विरोध, मानसिक स्वास्थ्य, पोषण आदि पर हिंदी में सामग्री तैयार की जाती है। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र सहित कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर महत्व दिया जा रहा है। विदेशों में भारतीय दूतावासों द्वारा हिंदी प्रचार कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।यह हमें गौरवान्वित महसूस कराता है कि आज विश्वभर में लगभग 2 लाख से अधिक विदेशी हिंदी सीख रहे हैं, जिनमें रूस, जापान, अमेरिका और यूरोप के विश्वविद्यालय शामिल हैं। अंत में यही कहूंगा कि हिंदी भाषा भारत की आत्मा है। यह न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि संस्कृति, परंपरा और विचारों की अभिव्यक्ति का सबसे मजबूत आधार भी है। इसकी समृद्ध साहित्यिक धरोहर, सहजता और व्यापक उपयोग ने इसे विश्व की प्रमुख भाषाओं में शामिल किया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज संपूर्ण विश्व में हमारी भाषा हिन्दी सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिंदी का प्रसार शिक्षा, तकनीक और मीडिया के माध्यम से तेज़ी से हो रहा है, जिससे आने वाले समय में इसका दायरा और व्यापक होगा। निष्कर्षणः हम कह सकते हैं कि हिंदी हमारी विरासत है और इसे आगे बढ़ाना हमारी ज़िम्मेदारी और नैतिक कर्तव्य है। जय-जय हिंदी।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

बिलाड़ा के मूल निवासी राजूराम सीरवी बने जैतारण के नए थानाधिकारी

विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा किया सम्मान

ब्यावर: पुलिस सेवा में अपने समर्पण और अनुशासित कार्यशैली के लिए पहचाने जाने वाले राजुराम सीरवी को एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरवपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। उनके पिता किशनाराम काग (निरीक्षक पुलिस) के पुत्र राजुराम का पुलिस लाईन, ब्यावर से पदस्थापन पुलिस थाना,जैतारण के थानाधिकारी के रूप में हुआ है।बिलाड़ा के मूल निवासी बेरा बारलाट, गांव खारिया मिठापुर से राजुराम सीरवी की यह पदोन्नति उनकी कठोर मेहनत, लगन और पुलिस विभाग के प्रति उनके अटूट समर्पण का परिणाम है। यह नया पदभार उनके लिए एक जनसेवा का एक बड़ा अवसर लेकर आया है। आशा है कि वे अपने अनुभव और कर्तव्य पथ का निर्वहन करते हुए जैतारण क्षेत्र में कानून-व्यवस्था को सुदृढ़ करेंगे और क्षेत्रवासियों के जन कल्याण हेतु सराहनीय कार्य करेंगे। नवीन पदभार ग्रहण कार्यक्रम के लिए सीरवी समाज डॉट कॉम वेबसाइट परिवार,परिवार सीरवी नवयुवक मंडल परगना समिति बिलाड़ा परिवार की ओर से अध्यक्ष लोकेश चौधरी, हीरालाल चोयल, डॉ रमेश राठौड़, पुखराज झांझावत, चिमन प्रकाश पंवार, गोविंद सिंह पंवार रोबड़ी, भूपेंद्र सिंह गारिया, जितेंद्र मेरावत, गेनाराम हांबड, दलपत सिंह, देवेन्द्र राठौड़,दिनेश चिरावत,सुमेर चौधरी, राजू काग, ओम प्रकाश काग, भूडाराम सीरवी सहित सामाजिक गणमान्यों की उपस्थिति में राजुराम सीरवी को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं दी गई।

छत्तीसगढ़ी पारिवारिक फिल्म "जिंदगी पहाही तोर संग" की शूटिंग अंतिम दौर में

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। छत्तीसगढ़ी सिनेमा प्रेमियों के लिए बड़ी खुशखबरी है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति, परंपरा और कला को समर्पित एक नई पारिवारिक फिल्म ₹जिंदगी पहाही तोर संग₹ की शूटिंग बालको क्षेत्र में जोर-शोर से चल रही है। यह फिल्म इमोशनल, ड्रामा और मनोरंजन का बेहतरीन संगम प्रस्तुत करते हुए पूरे परिवार के लिए दिलचस्प अनुभव देने जा रही है। फिल्म की कहानी व निर्माण का जिम्मा छत्तीसगढ़ी समाजसेवी व फिल्म निर्माता क्षमा पाटले ने उठाया है। उन्होंने ही फिल्म की कहानी भी लिखी है। निर्देशक की भूमिका में क्रांति शर्मा हैं, जो छत्तीसगढ़ी सिनेमा में अपनी विशेष पहचान बना चुके हैं।

इस फिल्म में छत्तीसगढ़ी सिनेमा के जाने-माने कलाकारों ने भाग लिया है। प्रमुख कलाकारों में आयुष राजवैद, दीपिका सिंह, रामेश्वरी पटनायक, मनोज जोशी, विनय अंबष्ट, बबली महंत, विक्रम राज, सरला सेन , नरेंद्र चंदेल, तरुण बघेल, अंशु चौबे, सिद्धार्थ कुर्रे, पहेली चौहान, पुष्पा रोज, नागेश ठाकुर, पुरुषोत्तम कश्यप, साहेब लाल साहू, चारु दुबे, नरेंद्र काबरा, अजय पाटले, शांडिल्य जी, सीमा तिवारी, लक्ष्मण दास, प्रतिभा कुजूर, सौम्या, शैलेन्द्री परिहार, वर्षा, चिंटू मानिकपुरी, राठौर

शामिल हैं।

फिल्म की तस्वीरों को संजोने का कार्य रवि नारायण बेहरा कर रहे हैं। साथ ही गीतकार के रूप में क्षमा पाटले, सोना दास और राघवेंद्र वैष्णव ने अपनी कलम से संगीतबद्ध गीत तैयार किए हैं। गायक और गायिकाओं में सुनील सोनी, चंपा निषाद, दीक्षा, ज्योति कंवर, अनुराग शर्मा शामिल हैं।

यह फिल्म छत्तीसगढ़ी समाज की रंगीनी, लोकसंस्कृति, पारिवारिक रिश्तों की गहराई और संघर्ष की भावनात्मक कहानी को पर्दे पर जीवंत रूप में प्रस्तुत करेगी। फिल्म का उद्देश्य छत्तीसगढ़ के रीति-रिवाज, लोकगीत, पहनावा, परंपराएं व सामाजिक संदेश को हर घर तक पहुंचाना है।

सोमेसर रेलवे स्टेशन पर जोधपुर-हड़पसर एक्सप्रेस का ठहराव शुरू, ग्रामीणों ने सांसद चौधरी का जोरदार स्वागत-सम्मान

पाली। शनिवार को सोमेसर में ऐसा माहौल रहा, मानो कोई बड़ा पर्व-त्यौहार मनाया गया हो। पाली सांसद एवं एक राष्ट्र-एक चुनाव संयुक्त संसदीय समिति के अध्यक्ष पीपी चौधरी के प्रयासों से मिली जोधपुर-हड़पसर एक्सप्रेस ट्रेन के नियमित ठहराव के प्रारंभ पर भव्य कार्यक्रम हुआ। पाली से यहां पहुंचे सांसद का का नागरिक अभिनंदन किया गया, इसके बाद गांव के चौक से लेकर सोमेसर रेलवे स्टेशन तक बड़ी संख्या ने एकत्रित हुए ग्रामीणों ने गाजे-बाजे के साथ जुलूस के रूप में लेकर पहुंचे। जगह-जगह पुष्पवर्षा की गई। रेलवे स्टेशन पर हुए भव्य कार्यक्रम में सांसद चौधरी ने पिछले 11 वर्षों में पाली जिले को रेलवे क्षेत्र में मिली अभूतपूर्व सौगातों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव की अगुवाई में न केवल देश, प्रदेश बल्कि पाली लोकसभा में रेलवे लगातार अपनी सेवाओं में नए कीर्तिमानों को स्थापित कर रहा है। स्टेशनों पर आधुनिक सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। ट्रेनों की संख्या भी बढ़ाई जा रही है। सांसद चौधरी ने कहा कि अब डबल इंजन सरकार होने के कारण विकास कार्यों की नई गाथा लिखी जा रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में समृद्ध राजस्थान का निर्माण हो रहा है। उन्होंने कहा कि अति-महत्वपूर्ण जोधपुर-हड़पसर एक्सप्रेस ट्रेन के ठहराव से न केवल सोमेसर बल्कि आस-पास के सैकड़ों गांवों को फायदा मिलेगा। यहां के लोगों को अब रानी और मारवाड़ जंक्शन रेलवे स्टेशन की दूरी तय नहीं करनी पड़ेगी। आवागमन आसान होगा, रोजगार भी बढ़ेगा। अन्य ठहरावों और मांगों के लिए भी वे प्रयासरत है, जल्द उन्हें भी पूरा करने के लिए प्रयासरत है। सांसद चौधरी ने ठहराव एवं स्वागत कार्यक्रम को भव्य एवं सफल बनाने के लिए मारवाड़ युवा संघर्ष समिति के अध्यक्ष हुकमसिंह सेपटावास एवं ग्रामीणों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष सुनील भंडारी, प्रधान प्रतिनिधि पुखराज पटेल, जिला महामंत्री नारायण कुमावत, भंवर चौधरी, ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष हेमंत गादाणा, जिला प्रकोष्ठ प्रभारी जयवर्धन रांकावत, पंचायत समिति सदस्य दिनेश चौधरी, सरपंच अर्जुनलाल आदिवाल, सरपंच जोगाराम कुमावत सहित अजमेर मंडल से जुड़े रेलवे अधिकारीगण, स्थानीय जनप्रतिनिधि, भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता और बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।

खेलकूद प्रतियोगिता सांसद चौधरी ने किया अंतरजिला सिविल सेवा वॉलीबॉल पुरूष प्रतियोगिता का शुभारंभः इससे पहले सांसद चौधरी ने बांगड़ स्टेडिय में 10वीं राजस्थान राज्य अंतरजिला सिविल सेवा बॉस्केटबॉल पुरूष एवं 9वीं राजस्थान राज्य अंतरजिला सिविल सेवा वॉलीबॉल पुरूष प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि खेलो के माध्यम से तन और मन स्वस्थ रहता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भी मंशा है कि देश के युवा व नागरिक स्वस्थ रहे और फिट रहे जिसके फिट इंडिया मुहिम भी चलायी गयी है। उन्होंने सभी खिलाडियों को प्रतियोगिता के लिये शुभकामनायें दी। फसलें नुकसान और क्षतिग्रस्त सड़कों के लिए कलेक्टर को दिए निर्देशः सांसद चौधरी ने जिला कलेक्टर एलएन मंत्री फसल नुकसान और क्षतिग्रस्त सड़कों के विषय पर महत्वपूर्ण चर्चा की। इस दौरान उन्होंने कहा कि हम सभी को मिलकर जिले के अतिवृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों के किसानों और आमजन को हरसंभव सहायता जल्द से जल्द से मुहैया करवानी है। सांसद ने जिला कलेक्टर को स्थानीय स्तर पर विशेष कमेटी बनाने का सुझाव दिया जो किसानों को हुए फसल खराबे को लेकर की जारी गतिविधियों पर निगरानी रखें और कोई भी अधिकारी सुस्ती दिखाई, उनके खिलाफ विभागीय कार्यवाही की जावे। इसके अलावा सांसद चौधरी ने कलेक्टर को अतिवृष्टि प्रभावित क्षेत्रों में क्षतिग्रस्त सड़कों, नहरों तथा भवनों के मरम्मत के प्रस्तावों को जल्द से जल्द स्वीकृत करने एवं राज्य सरकार को भेजने के विशेष रूप से निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायतों से क्षतिग्रस्त सड़कों और भवनों के प्रस्ताव शीघ्र प्रेषित भी करवाए जाएं।

उपचुनाव के लिए बड़ी खबर: आमने-सामने होंगे बीजेपी, बिजेड़ी, कोंग्रस

नोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

B: नुआपाड़ा उपचुनाव के लिए बड़ी खबर। उपचुनाव से पहले निर्वाचन क्षेत्र में संक्षिप्त पुनरीक्षण (एसएसआर) किया जाएगा। राज्य निर्वाचन अधिकारी ने इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी है। मतदान केंद्रों का पुनर्गठन/संशोधन रविवार तक किया जाएगा। दावे और आपत्तियाँ दर्ज करने की अंतिम तिथि 15 से 29 सितंबर है।वहीं, मांगों और आपत्तियों का निपटारा 7 अक्टूबर तक कर दिया जाएगा। अंतिम मतदाता सूची 9 अक्टूबर को प्रकाशित की जाएगी।

हाल ही में, नुआपाड़ा विधायक राजेंद्र ढोलकिया का निधन हो गया। वे 2004 में नुआपाड़ा से निर्दलीय विधायक चुने गए थे। बाद में, वे बीजद में शामिल हो गए और 2014, 2019 और 2024 के चुनावों में जीत हासिल की। वे कैबिनेट मंत्री भी रहे।हालांकि, उनके निधन के बाद नुआपाड़ा में विधायक की सीट खाली हो गई है। वहां उपचुनाव होने वाला है। इसमें तीनों प्रमुख दलों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिलेगी। खासकर, मोहन माझी की सरकार पहली बार उपचुनाव का सामना करने जा रही है। यह उपचुनाव दिखाएगा कि जनता उनसे कितनी खुश है। दूसरी ओर, जहां भाजपा की ओर से बसंत पांडा के बेटे अभिनंदन पांडा को टिकट दिए जाने की चर्चा है, वहीं बीजेडी से राजेंद्र ढोलकिया के परिवार से किसी को टिकट मिल सकता है। वहीं, घासीराम माझी पिछले चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनावी मैदान में उतरे थे। हाल ही में उनकी कांग्रेस में वापसी हुई है, वहीं पार्टी द्वारा उन्हें टिकट दिए जाने की भी चर्चा है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023